



महिलाओं को लेकर  
बदला बॉलीवुड का नजरिया

आजम खान के जेल जाने के  
राजनीतिक मायने क्या हैं ?



# सेन्सर टाइम्स

www.censortimes.com

डाक पंजीयन क्रमांक-एमपी/आईडीसी/1117/2019-2021

वर्ष-17  
अंक-12  
मासिक  
1 मार्च 2020  
पृष्ठ-12  
मूल्य- पाँच रुपये

## महिलाओं के सशक्तिकरण

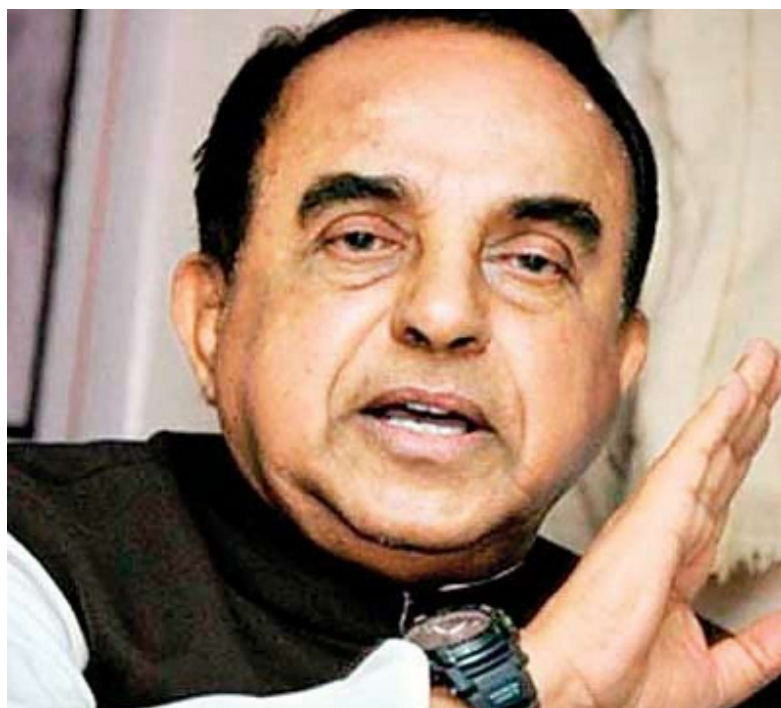


p4

महिलाओं को शर्मसार करने वाली  
कुछ बातें भी सामने आई हैं।  
गुजरात के सूरत में महिला प्रशिक्षु  
जलकों के साथ अभद्रता की घटना  
सामने आयी है। जिससे सज्ज माने  
जाने वाले समाज का सिर शर्म से  
झुक गया है। सूरत नगर निगम में  
प्रशिक्षु जलकों की शारीरिक जांच के  
नाम पर उन्हें निर्वस्त्र कर घंटों  
कतार में खड़ा रहने के लिए मजबूर  
किया गया। इतना ही नहीं उस  
दौरान ना तो उनकी निजता का  
ज्याल रखा गया और ना ही उनके  
साथ संवेदनशीलता दिखाई गई।  
गए।

स्वामी का सनसनीखेज खुलासा, ताहिर हुसैन के आतंकी कनेक्शन की  
जांच कर रहे थे अंकित शर्मा

p12



शिक्षित समाज में तलाक की प्रवृत्ति बढ़ी है,  
मोहन भागवत ने गलत क्या कहा ?

p6



अन्दर के पृष्ठ पर.....

चंद्रशेखर को मिल रहे दलितों के समर्थन से  
मायावती मुश्किल में

P-3

शिक्षित समाज में तलाक की प्रवृत्ति बढ़ी है,  
मोहन भागवत ने गलत क्या कहा ?

P-7

कन्हैया के खिलाफ राजनीतिक,  
कानूनी लड़ाई लड़ेंगे-भाकपा

P-12

महिला सशक्तिकरण-सिर्फ बातें ही  
हकीकत कुछ और है

P-5



## सम्पादक की कलम से

सुप्रीम कोर्ट के एक महत्वपूर्ण फैसले पर देश के समाचार पत्रों और इलेक्ट्रॉनिक चैनलों ने बहुत कम कवरेज किया है। इस महत्वपूर्ण फैसलें का इसलिए स्वागत योग्य है कि यह हमारे देश से जातिवाद को खत्म करने में बहुत सहायता करेगा। इस फैसले का लब्बोलुआव यह है कि आप किसी भी सरकार को जाति के आधार पर सरकारी नौकरियों में आरक्षण देने के लिए बाध्य नहीं कर सकते। हमारे देश में अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़ों को आरक्षण देने की प्रचलित प्रथा चली आ रही है। सरकारी नौकरियों में इनकी संख्या इनके अनुपात में बहुत कम है। उनके साथ सदियों से अन्याय होता रहा है। ये सब लोग मेहनती होते हैं। जीतोड़ काम करते हैं। हमारे राजनीतिक दलों ने अपने स्वार्थ के लिये इस अन्याय को ठीक करने के लिए एक बहुत ही आसान सा रास्ता निकाल लिया है। वह है, सरकारी नौकरियों में उनको आरक्षण दे दिया जाए। कोई आदमी किसी पद के योग्य है या नहीं है, यदि वह अनुसूचित है या पिछड़ा है तो उसे उस पद पर प्रतिष्ठित किया जा सकता है। इन जातियों के लोगों ने इसे अपना जन्मसिद्ध मूलभूत अधिकार समझ लिया था।

कुछ वर्ष पहले सुप्रीम कोर्ट ने न्यायालय ने पिछड़ों में जो क्रीमी लेयर याने मलाईदार पद पर विराजमान याने जो संपन्न लोग हैं, उनके आरक्षण को गलत और बेबुनियाद बताया और अब उसने यह एतिहासिक फैसला दिया है कि अनुसूचितों को आरक्षण देना राज्य सरकारों की इच्छा पर निर्भर करेगा। अब यह अनिवार्य नहीं होगा। यह अनुसूचितों का मूलभूत अधिकार नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने उत्तराखंड उच्च न्यायालय के 2008 में दिए गए फैसले को क्वाश कर दिया और कहा कि उत्तराखंड सरकार को पूरा हक है कि वह समस्त सरकारी पदों को बिना किसी आरक्षण के भर सके।

संविधान के अनुच्छेद 16 में आरक्षण संबंधी जो प्रावधान है, वह राज्य सरकारों को इस बात की छूट देता है कि वे अपनी जांच के आधार पर तय करें कि उन्हें कोई पद आरक्षित करने हैं या नहीं ? यही सिद्धांत पदोन्नतियों पर भी लागू होता है। मुझे ऐसा विश्वास है कि सभी राज्य और केंद्र सरकारें इस फैसले पर बेहद सख्ती से अमल करेंगी। अब प्रश्न यह होगा कि हमारे करोड़ों पिछड़े, ग्रामीण, गरीब भाइयों को न्याय कैसे मिलेगा ? उनके साथ न्याय करना बेहद जरूरी है। राष्ट्र का यह नैतिक कर्तव्य है। इसके लिये दो तरीके हैं। पहला तरीका उन सबके बच्चों के लिए शिक्षा, भोजन और वस्त्र मुफ्त दिए जाने चाहिए और दूसरा तरीका मानसिक और शारीरिक श्रम की कीमतों में एक से दस गुने से ज्यादा फर्क नहीं होना चाहिए। वे अपनी योग्यता से आगे बढ़ेंगे। किसी की दया के मोहताज नहीं होंगे। स्वाभिमानी राष्ट्र का निर्माण होगा।

# बड़बोले नेता आजम खान के जेल जाने के राजनीतिक मायने क्या हैं ?

रामपुर में सांसद आजम खान की दहशत के आलम को देखते हुए पहले तो लोगों को भरोसा ही नहीं हुआ कि आजम को पूरे परिवार के साथ जेल भेज दिया गया है लेकिन जब यकीन आया तो लोग मिठाई बांटते नजर आए। भाजपा के कार्यकर्ता तो बाकायदा जश्न मनाते नजर आये।



आखिरकार समाजवादी पार्टी के दिग्गज नेता आजम खान को अपनी पत्नी और बेटे के साथ जेल जाना ही पड़ा। बुधवार को कोर्ट के आदेश पर सपा के दिग्गज नेता आजम खान को पत्नी डॉ. फातिमा और बेटे अब्दुल्ला आजम खान के साथ 2 मार्च तक न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। रामपुर की बात तो जाने ही दीजिए...एक जमाना ऐसा था कि रामपुर से लेकर लखनऊ तक आजम खान की तूती बोलती थी। रामपुर से लेकर गाजियाबाद तक आजम खान ने जो बोल दिया प्रशासन उसे पूरा करने में जुट जाता था। यहां तक कि वर्तमान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के गृह जनपद गोरखपुर में भी आजम खान अपनी मनमर्जी किया करते थे।

## आखिर कौन है यह आजम खान ?

कैसे आजम खान नाम का यह व्यक्ति इतना ताकतवर हो गया कि नेता जी यानि मुलायम सिंह यादव अपने परिवार से भी ज्यादा इस शख्स को मानते रहे ? कौन है ये आजम खान जिसे समाजवादी पार्टी के वर्तमान मुखिया अखिलेश यादव भी चाहते हैं ?

आजम खान 1980 में पहली बार रामपुर सीट से विधायक चुने गए थे। तब से लेकर आज तक रामपुर में आजम खान का ही चुनावी सिक्का चलता रहा। 1992 में नेताजी के नाम से मशहूर हो चुके मुलायम सिंह यादव ने जब अपनी खुद की पार्टी बनाने का फैसला किया तो आजम खान उनके साथ हो गए। आजम खान समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्य रहे और तभी से मुलायम सिंह यादव के खास बनते चले गए। मुलायम के माई समीकरण में आजम खान सपा के बड़े मुस्लिम चेहरे के तौर पर उभरे और लगातार मजबूत होते चले गए। रामपुर से लेकर लखनऊ तक उनकी हनक बढ़ती चली गई। नाराज होने पर कभी मुलायम आजम खान को मनाते नजर आए तो कभी अखिलेश। 2009 में अमर सिंह के कारण जब आजम खान ने सपा से किनारा कर लिया तो मुलायम सिंह यादव ने अपने सबसे करीबी अमर सिंह को धीरे-धीरे साइड करते हुए आजम को फिर से पार्टी में शामिल कर लिया। रामपुर में वही होता था जो आजम खान चाहते थे। जब मन किया जयाप्रदा को चुनाव जिता दिया, जब मन किया जयाप्रदा को बेइज्जत करके चुनाव हरा दिया। आजम स्वयं 9 बार रामपुर से विधायक चुने गए।

2019 में मन किया तो लोकसभा का चुनाव लड़ा और तमाम विपरीत हालात में भाजपा उम्मीदवार जयाप्रदा को हरा कर लोकसभा पहुंच गए। इससे पहले बेटे अब्दुल्ला आजम खां को रामपुर की ही स्वार विधानसभा सीट से 2017 में विधायक बवना चुके थे। पत्नी डॉ. तजीन फातिमा प्रोफेसर हैं और लंबे समय तक आजम खान ने इनका तबादला रामपुर से बाहर होने ही नहीं दिया। अखिलेश यादव को बोलकर पहले पत्नी को राज्यसभा भिजवाया और जब खुद लोकसभा का चुनाव जीत गए तो पत्नी को राज्यसभा से इस्तीफा दिलवा कर अपनी परंपरागत सीट रामपुर शहर से चुनाव लड़वाया और जितवाया। रामपुर सीट से 9 बार खुद आजम खान चुनाव जीत चुके हैं।

इसलिए तो आजम खान को रामपुर का बेताज बादशाह कहा जाता था लेकिन वक्त बदलता है और यूपी की राजनीति में भी बदलाव आया। भाजपा का 14 वर्षों का वनवास खत्म हुआ और

2017 में योगी आदित्यनाथ सूबे के मुखिया बने। इसके बाद से ही आजम खान की कलाई एक-एक करके खुलने लगी। अब आलम यह है कि आजम खान पर रिकॉर्ड 85 से अधिक मुकदमे दर्ज हैं। जिस रामपुर में उनके खिलाफ कोई बोलने की हिम्मत नहीं करता था वहां एक-एक करके कई गवाह सामने आ चुके हैं। रामपुर का प्रशासन उन्हें भू-माफिया घोषित कर चुका है। डकैती की साजिश रचने से लेकर शत्रु संपत्ति कब्जाने तक के मामले में आजम खान फंस चुके हैं। सेना पर विवादित बयान देने का मामला हो या जौहर विश्वविद्यालय के लिए किसानों की जमीन कब्जाने का या रामपुर से सांसद रह चुकीं फिल्मी कलाकार जयाप्रदा के खिलाफ आपत्तिजनक और अमर्यादित बयान देने का मामला या फिर बिजली चोरी का। आजम खान पर मुकदमों की लिस्ट लंबी होती चली गई और इसी के साथ उनकी परेशानी का दौर भी बढ़ता चला गया। अब हालत यह हो गई है कि उनके खिलाफ कुर्की की प्रक्रिया भी शुरू हो चुकी है।

आजम खान की ठसक का आलम ये था कि कोर्ट के बार-बार सम्मन जारी करने के बावजूद वो अदालत के सामने जाना पसंद नहीं करते थे और नतीजा अदालत को उनके खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी करना पड़ा। इस सप्ताह बुधवार को बेटे अब्दुल्ला आजम खां के दो जन्म प्रमाण पत्र बनवाने के मामले में आजम खान को अपनी पत्नी और बेटे सहित जेल जाना पड़ा। इससे पहले मंगलवार को ही अदालत ने उनकी संपत्ति की कुर्की का आदेश जारी किया था। बुधवार को आजम खान ने परिवार सहित अदालत के सामने आत्मसमर्पण किया। उनके वकीलों ने 17 मामलों में जमानत की अर्जी दाखिल की। कुछ में जमानत मिल गई, कुछ में तारीख मिली और बेटे के फर्जी जन्म प्रमाण पत्र के मामले में जैसे ही उनकी जमानत याचिका खारिज हुई। अदालत ने तलख टिप्पणी करते हुए तीनों को न्यायिक हिरासत में जेल भेजने का आदेश दे दिया। रामपुर में आजम खान की दहशत के आलम को देखते हुए पहले तो लोगों को भरोसा ही नहीं हुआ और जब यकीन आया तो लोग मिठाई बांटते नजर आए। भाजपा के कार्यकर्ता तो बाकायदा जश्न मनाते नजर आये। रामपुर के छोटे से कार्यकर्ता से लेकर लखनऊ तक बैठे भाजपा के दिग्गज नेता यह दावा करते नजर आए कि यूपी में योगी राज है, कानून का राज है और अब आजम खान जैसे हर नेता को जेल ही जाना पड़ेगा।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मीडिया सलाहकार मृत्युंजय कुमार ने आजम खान के जेल जाने पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि सत्ता का दुरुपयोग करने वालों को भ्रम टूट रहा है। आजम खान का जेल जाना भ्रष्टाचार पर सरकार के जीरो टॉलरेंस का नतीजा है। संदेश साफ है, दोषी कितना भी ताकतवर हो, सरकार उसके प्रति नरमी नहीं बरतेगी। यह भी पूरी तरह से सच है कि आजम खान के जेल जाने के बाद उनकी ताकत का तिलिस्म भी टूटेगा और राजनीतिक वर्चस्व भी। सपा मुखिया अखिलेश यादव इसे बखूबी समझ रहे हैं इसलिए फिलहाल तो सपा इसे बदले की कार्रवाई भी बता रही है और साथ ही अदालत से न्याय मिलेगा, यह भरोसा भी जता रही है। लेकिन आने वाले दिनों में सपा मुखिया के सामने दुविधा लगतार बढ़ती ही चली जाएगी कि वो अपनी पार्टी के सबसे बड़े मुस्लिम चेहरे के पक्ष में खड़े हो या नहीं और खड़े हो भी तो कैसे...क्योंकि कमजोर आजम खान सपा के किसी मतलब के नहीं रह जाएंगे। इसे ही कहते हैं राजनीति में वक्त बदलना और वक्त को तो बदलना ही है।

FORM-IV

(See Rule 8)

Statement about ownership &amp; other Particulars about Newspaper

1.	Place of Publication	:	INDORE
2.	Periodicity of its Publication	:	MONTHLY
3.	Printer's Name	:	RAVI KUMAR POTDAR
	Whether citizen of India?	:	Yes
	(If foreigner, state the country of origin)	:	
	Address	:	72/74, Suyash Vihar, Indore (M.P.)
4.	Publisher's Name	:	RAVI KUMAR POTDAR
	Whether citizen of India?	:	Yes
	(If foreigner, state the country of origin)	:	
	Address	:	72/74, Suyash Vihar, Indore (M.P.)
5.	Editor's Name	:	RAVI KUMAR POTDAR
	Whether Citizen of India?	:	Yes
	(If foreigner, state the country of origin)	:	
	Address	:	72/74, Suyash Vihar, Indore (M.P.)
6.	Names and Addresses of individuals who own the Newspapers and partners of share holders holding more than one per cent of the total capital.	:	RAVI KUMAR POTDAR  Indore (M.P.) 72/74, Suyash Vihar, Indore (M.P.)

I, RAVI KUMAR POTDAR, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-

Date : 01.03.2020

Signature of Publisher



नागरिकता कानून के खिलाफ देशभर में मचे सियासी घमासान के बीच बीएसपी सुप्रीमो मायावती ने भीम आर्मी के प्रमुख चंद्रशेखर आजाद पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया था कि चंद्रशेखर सिर्फ चुनाव में फायदा उठाने के लिए प्रदर्शन करते हैं और जेल चले जाते हैं। मायावती ने पार्टी के लोगों से अपील की थी कि वे चंद्रशेखर आजाद और उन जैसे स्वार्थी लोगों से सचेत रहें। बिना इजाजत नई दिल्ली में जामा मस्जिद से जंतर मंतर तक हुए विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लेने के कारण चंद्रशेखर आजाद को जब 14 दिन की न्यायिक हिरासत में तिहाड़ जेल भेज दिया गया तो बीएसपी प्रमुख ने एक के बाद एक कई ट्वीट के जरिए चंद्रशेखर पर हमला बोला। ट्वीट में मायावती ने लिखा, 'दलितों का आम मानना है कि भीम आर्मी के चंद्रशेखर, विरोधी पार्टियों के हाथों खेलकर खासकर बीएसपी के मजबूत राज्यों में षड्यन्त्र करते हैं। चुनाव के करीब वहां पार्टी के वोटों को प्रभावित करने वाले मुद्दे पर प्रदर्शन आदि कर जबरन जेल जाते हैं।' एक अन्य ट्वीट में उन्होंने लिखा था, '%वैसे तो आजाद यूपी के रहने वाले हैं लेकिन नागरिकता कानून पर वह दिल्ली के जामा मस्जिद वाले प्रदर्शन में शामिल होकर जबरन अपनी गिरफ्तारी करवा रहे हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि वहां जल्द चुनाव है।'

## चंद्रशेखर को मिल रहे दलितों के समर्थन से मायावती मुश्किल में

मायावती को विरोधियों के साथ-साथ अपने संगी-साथियों यानी पार्टी के कई बड़े नेताओं की बगावत से भी दो-चार होना पड़ा, लेकिन मायावती को जिसने भी चुनौती दी उसे बसपा से तो बाहर का रास्ता दिखा ही दिया गया, दलित वोटरों ने भी ऐसे नेताओं का साथ नहीं दिया।



उत्तर प्रदेश की सियासत और उसमें भी दलित सियासत की जब भी चर्चा होती है तो बसपा सुप्रीमो मायावती के बिना यह चर्चा अधूरी रह जाती है। वैसे तो मायावती पूरे देश में दलित राजनीति का एक बड़ा चेहरा हैं, लेकिन बात जब यूपी की चलती है तो यहां उनका कद काफी बड़ा दिखाई पड़ता है। कभी यूपी के दलितों को कांग्रेस का मजबूत वोट बैंक माना जाता था। दलित वोट बैंक के सहारे कांग्रेस ने दशकों तक यूपी की सत्ता पर राज किया और जब इन्हीं दलितों ने कांग्रेस का दामन छोड़कर बहुजन समाज पार्टी (बसपा) का दामन थामा तो प्रदेश में न तो कांग्रेस की सत्ता बची न ही पार्टी की साख बच पाई। दलित वोट बैंक के सहारे मायावती ने एक-दो बार नहीं चार बार मुख्यमंत्री की कुर्सी संभाली।

वर्ष 1977 में कांशीराम के सम्पर्क में आने के बाद मायावती ने पूर्ण कालिक राजनीतिज्ञ बनने का निर्णय ले लिया। कांशीराम के संरक्षण के अन्तर्गत वे उस समय उनकी कोर टीम का हिस्सा रहीं, 1984 में बसपा की स्थापना हुई और करीब दस वर्ष बाद 03 जून 1995 को मायावती पहली बार उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री भी बन गईं। मायावती ने अपने करीब चार दशक के सियासी सफर में कई उतार-चढ़ाव देखे तो मुश्किल से मुश्किल चुनौतियों का सामना भी किया। मायावती और मुलायम की अदावत तो जगजाहिर थी, तो समय-समय पर मायावती पर भ्रष्टाचार के भी आरोप लगते रहे, लेकिन इससे मायावती को कभी नुकसान नहीं हुआ। उनकी हनक और धमक के किस्से आज भी सुनने को मिल जाते हैं। उत्तर प्रदेश में वैसे तो तमाम

मुख्यमंत्री हुए उसमें से कुछ काफी सख्त भी थे, लेकिन मायावती एक मात्र ऐसी सीएम थीं, जिनके सामने खड़े होने में उत्तर प्रदेश की नौकरशाही के पांव कांपने लगते थे और पसीना छूट जाता था।

मायावती को अपने चार दशक के सियासी जीवन में विरोधियों के साथ-साथ अपने संगी-साथियों यानी पार्टी के कई बड़े नेताओं की बगावत से भी दो-चार होना पड़ा, लेकिन मायावती को जिसने भी चुनौती दी उसे बसपा से तो बाहर का रास्ता दिखा ही दिया गया, दलित वोटरों ने भी ऐसे नेताओं का साथ नहीं दिया। यही वजह थी कि सत्ता से बाहर आने के बाद यह नेता अपना वजूद नहीं बचा पाए, लेकिन लगता है कि बड़ी से बड़ी चुनौतियों का सहजता से सामना करके उससे पार पा लेने में सफल रहने वाली मायावती पिछले तीन-चार वर्षों से भीम आर्मी के नेता चंद्रशेखर आजाद उर्फ 'रावण' से मिलने वाली चुनौतियों से पार नहीं पा रही हैं। यह सब तब है जबकि चंद्रशेखर बसपा सुप्रीमो मायावती को अपनी बुआ बताता है। दरअसल, मायावती की मुश्किल यह है कि उन्होंने अपने सियासी जीवन में दलितों को लुभाने के लिए जिन मुद्दों को कभी हवा नहीं दी, चंद्रशेखर उन्हीं मुद्दों को हवा दे रहा है।

चंद्रशेखर उन लोगों के साथ खड़ा नजर आता है जिससे मायावती हमेशा दूरी बनाकर चलती थीं। मायावती कांग्रेस से दूरी बनाकर चलती हैं, लेकिन भीम आर्मी प्रमुख प्रियंका से निकटता बनाए हुए हैं। मायावती कश्मीर से धारा 370 हटाने का विरोध नहीं करती हैं, जबकि चंद्रशेखर इसका पुरजोर विरोध

कर रहा है। इसी प्रकार नागरिकता संशोधन एक्ट (सीएए) के खिलाफ चंद्रशेखर पूरे देश में घूम रहे हैं, लेकिन मायावती विरोध के नाम पर सोशल मीडिया से आगे नजर नहीं आती हैं।

दिसंबर 2019 में नागरिकता कानून के खिलाफ देशभर में मचे सियासी घमासान के बीच बीएसपी सुप्रीमो मायावती ने भीम आर्मी के प्रमुख चंद्रशेखर आजाद पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया था कि चंद्रशेखर सिर्फ चुनाव में फायदा उठाने के लिए प्रदर्शन करते हैं और जेल चले जाते हैं। मायावती ने पार्टी के लोगों से अपील की थी कि वे चंद्रशेखर आजाद और उन जैसे स्वार्थी लोगों से सचेत रहें। बिना इजाजत नई दिल्ली में जामा मस्जिद से जंतर मंतर तक हुए विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लेने के कारण चंद्रशेखर आजाद को जब 14 दिन की न्यायिक हिरासत में तिहाड़ जेल भेज दिया गया तो बीएसपी प्रमुख ने एक के बाद एक कई ट्वीट के जरिए चंद्रशेखर पर हमला बोला। ट्वीट में मायावती ने लिखा, 'दलितों का आम मानना है कि भीम आर्मी के चंद्रशेखर, विरोधी पार्टियों के हाथों खेलकर खासकर बीएसपी के मजबूत राज्यों में षड्यन्त्र करते हैं। चुनाव के करीब वहां पार्टी के वोटों को प्रभावित करने वाले मुद्दे पर प्रदर्शन आदि कर जबरन जेल जाते हैं।' एक अन्य ट्वीट में उन्होंने लिखा था, 'वैसे तो आजाद यूपी के रहने वाले हैं लेकिन नागरिकता कानून पर वह दिल्ली के जामा मस्जिद वाले प्रदर्शन में शामिल होकर जबरन अपनी गिरफ्तारी करवा रहे हैं।' ऐसा इसलिए क्योंकि वहां जल्द चुनाव है।'

बसपा सुप्रीमो की चिंता अपनी जगह है, इससे चंद्रशेखर आजाद उर्फ रावण की सेहत पर शायद कोई असर नहीं पड़ता होगा इसीलिए तो चर्चा है अब तो भीम आर्मी नेता चंद्रशेखर रावण अपना राजनैतिक दल भी बनाने जा रहे हैं। चंद्रशेखर कई छोटे-छोटे क्षेत्रीय दलों को एक झंडे तले लाकर सपा-बसपा और भाजपा का खेल बिगाड़ने की कोशिश कर रहा है। चंद्रशेखर की मंशा यह है कि बसपा सुप्रीमो मायावती को किनारे रखकर बहुजन समाज के लिए एक नया नेतृत्व खड़ा किया जाए। इसके लिए चंद्रशेखर ने लखनऊ के वीआईपी गेस्ट हाउस में अपनी नजरबंदी के दौरान कुछ नेताओं से मुलाकात भी की है। बताते चलें कि लखनऊ के घंटाघर पार्क में सीएए के विरोध में चले रहे धरने में भाग लेने के लिए चंद्रशेखर लखनऊ आया था, लेकिन वह घंटाघर पहुंच पाता इससे पूर्व ही योगी सरकार ने चंद्रशेखर को नजरबंद कर दिया। वीआईपी गेस्ट हाउस में चंद्रशेखर ने सुहेलदेव समाज पार्टी के नेता ओम प्रकाश राजभर और बसपा के कुछ पूर्व नेताओं के साथ बैठक की।

वैसे, यहां यह बताना भी जरूरी है कि चंद्रशेखर से बसपा सुप्रीमो मायावती ही नहीं भाजपा भी चिढ़ी रहती है। योगी सरकार चंद्रशेखर को रासुका के तहत निरुद्ध भी कर चुकी है। इसी प्रकार सीएए के विरोध में पूरे देश में घूम रहे चंद्रशेखर को उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने सीएए विरोधी एक भी जनसभा करने या किसी रैली में हिस्सा नहीं लेने दिया है।

खैर, यह सच है कि चंद्रशेखर आजाद उर्फ रावण भले मायावती का सीधे तौर पर विरोध करते नहीं दिखते हों पर बसपा सुप्रीमो मायावती उनकी मौजूदगी से हर समय खतरा महसूस करती रहती हैं। मायावती ने सीधे-सीधे भीम आर्मी के अगुआ चंद्रशेखर को भारतीय जनता पार्टी का गुप्तचर घोषित कर रखा है। पिछले वर्ष लोकसभा चुनाव के समय जब भीम आर्मी प्रमुख चंद्रशेखर ने बनारस से चुनाव लड़ने की घोषणा थी, तब भी मायावती ने चंद्रशेखर को निशाने पर लेते हुए कहा था कि वह दलितों का वोट बांटकर भाजपा को फायदा पहुंचाने के लिए ही वाराणसी लोकसभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। हालांकि बाद में चंद्रशेखर ने चुनाव लड़ने से इंकार कर दिया था। मायावती अक्सर यह आरोप भी लगाती रहती हैं कि भीम आर्मी को भाजपा ने ही बनवाया है।

बहरहाल, आज की तारीख में अगर मायावती के लिए कुछ भी अच्छा हो रहा है तो वह यह है कि मायावती की तरह योगी सरकार भी नहीं चाह रही है कि चंद्रशेखर उत्तर प्रदेश में अपने पांव पसारने में कामयाब हो पाए। ऐसा जब तक होता रहेगा, तब तक संभवतः मायावती को दलित वोट बैंक बिखरने का कोई खास खतरा नहीं रहेगा। भाजपा जरूर दलितों पर डोरे डालती रहती है, लेकिन 2019 के लोकसभा चुनाव में जिस तरह से दलितों ने बसपा का साथ दिया, उससे तो यही लगता है कि मायावती की सियासत पर दलित वोट बैंक खिसकने का खतरा नहीं मंडरा रहा है, लेकिन चंद्रशेखर जिस तरह बसपा सुप्रीमो मायावती को साइड लाइन करके स्वयं दलितों का मसीहा बनना चाह रहा है, उससे मायावती की दलित सियासत पर हर समय खतरा मंडराता रहेगा।



# महिलाओं के सशक्तिकरण

देश की महिलाएं शिक्षित हो जाएंगी. अभी हम कहे सकते हैं कि हमारे देश में महिलाओं के हालात बेहतर होते जा रहे हैं. जिस तरह पुरुषों को किसी भी मदद की जरूरत नहीं होती है. ठीक उसी तरह एक ऐसा दिन भी आएगा जब महिलाओं को भी किसी भी चीज का हल निकालने के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहना होगा. और उस दिन महिलाओं के सशक्तिकरण का देखा गया ये सपना सच हो सकेगा.



महिला सशक्तिकरण मुद्दे पर कई तरह की चर्चाएं और कई तरह की राय लोगों द्वारा दी जाती है. अक्सर कहा जाता है कि किसी भी देश की तरक्की तभी हो सकती है. जब उस देश की महिलाओं का विकास सही से किया जाए. वहीं इस वक्त महिलाओं के विकास के लिए पूरी दुनिया में कई तरह के कार्य भी किए जा रहे हैं. ताकि नारी शक्ति को हर क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन किया जा सके. वहीं इस सदी में भी महिला सशक्तिकरण करने के मुद्दे का जिक्र करना, इस बात को साबित करता है कि अभी भी महिलाओं का विकास पूरी तरह से नहीं किया जा सका है.

वहीं अगर आप लोगों को ऐसा लगता है कि केवल भारत ही ऐसा देश है. जहां पर महिलाएं अभी भी केवल एक गृहणी के रूप में जानी जाती हैं, तो ऐसा बिल्कुल नहीं है. भारत के अलावा अभी भी दुनिया के नक्शे में ऐसे कई देश मौजूद हैं. जहां पर महिलाओं का विकास ना के बराबर है.

## महिला सशक्तिकरण में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका

संयुक्त राष्ट्र के द्वारा कई कार्यक्रमों का आयोजन दुनिया भर में हर साल किया जाता है. जिसके जरिए नारी शक्ति को अपनी पहचान बनाने के लिए प्रेरित किया जा सके. वहीं ये काफी दुख की बात है कि अभी तक हम लोगों को महिलाओं और पुरुषों को समान पहचान और अधिकार देने के लिए इतनी मेहनत करनी पड़ रही है.

## भारत में महिलाओं की स्थिति

हमारे देश में नारियों की क्या परिस्थिति है, इस बात का अंदाजा इस चीज से ही लगाया जा सकता है, कि अभी भी भारत में ऐसे कई गांव हैं. जहां की महिलाओं का जीवन घर की चार दीवारों तक ही सीमित है. इतना ही नहीं हमारे देश में काम (नौकरी) करने वाली महिलाओं की संख्या भी अन्य देशों के मुकाबले कम हैं. हमारे देश की ज्यादातर पढ़ी-लिखी महिलाएं भी इस वक्त अपने हक के लिए कुछ भी नहीं कर पा रही हैं. उनको ना चाहते हुए भी ऐसा जीवन जीना पड़ रहा है, जिसके वो विरुद्ध हैं.

## भारत का महिला आरक्षण बिल

किसी भी देश को चलाने के लिए सभी महत्वपूर्ण फैसले उसकी संसद में ही लिए जाते हैं. वहीं हमारी संसद में अगर महिला सांसदों की संख्या देखी जाए, तो वो ना के सामान ही है. हमारे देश की महिलाओं की भूमिका देश को चलाने में ज्यादा खास नहीं है. वहीं संसद में महिलाओं की इतनी कम संख्या को देखते हुए भारत की सरकार ने साल 2010 में महिला आरक्षण बिल का संसद में सबके सामने प्रस्ताव रखा. इस बिल के मुताबिक संसद की 33 प्रतिशत सीटों को महिलाओं के लिए आरक्षित करने के नियम का प्रस्ताव रखा गया था. लेकिन उस समय कांग्रेस सरकार केवल राज्यसभा से ही इस बिल को पास करवाने में कामयाब रही थी. लोकसभा में इस बिल को पूर्ण बहुमत न

मिलने के कारण इसे पास नहीं किया जा सका था.

वहीं साल 1993 में भारत सरकार ने एक संवैधानिक संशोधन पारित किया गया था. जिसमें ग्रामीण परिषद स्तर के होने वाले चुनावों में एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित थी. जिसकी वजह से आज हर गांव में होने वाले चुनाव में महिला चुनाव लड़ती हैं.

## महिला सशक्तिकरण का महत्व

लोगों के मन में ये सवाल जरूर आया होगा कि आखिर क्यों महिला सशक्तिकरण के मुद्दे को विश्व के कई संगठनों द्वारा इतना महत्व दिया जाता है. वहीं इन सब सवालों के जवाब आपको नीचे दिए गए हैं.

## समाज का विकास

महिला सशक्तिकरण का मुख्य लाभ समाज से जुड़ा हुआ है. अगर हम लोगों को अपने देश को एक शक्तिशाली देश बनाना है, तो उसके लिए हम लोगों को समाज की महिला को भी शक्तिशाली बनाने की जरूरत है. महिलाओं के विकास का मतलब होता है कि आप एक परिवार का विकास का कार्य कर रहे हैं. अगर महिला शिक्षित होगी, तो वो अपने परिवार को भी पढ़ा-लिखा बनाने की कोशिश करेगी. जिसके चलते हमारे देश को पढ़े-लिखे नौजवान मिलेंगे. जो कि देश की तरक्की में अपनी योगदान दे सकेंगे.

## घरेलू हिंसा में कमी

घरेलू हिंसा एक ऐसी चीज है, जो कि किसी भी महिला के साथ हो सकती है. ये जरूरी नहीं है कि घरेलू हिंसा केवल अनपढ़ महिलाओं के साथ ही होती है. शिक्षित महिलाएं भी इस तरह की हिंसा का शिकार होती हैं. बस फर्क इतना होता है कि जहां पढ़ी-लिखी महिलाएं इसके खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत रखती हैं. वहीं अनपढ़ महिलाएं ऐसी हिंसा के विरुद्ध अपनी आवाज उठाने से डरती हैं. वहीं अगर महिलाओं का विकास किया जा सके तो हमारे देश में होने वाली घरेलू हिंसा में ना केवल कमी आएगी. बल्कि महिलाएं घरेलू हिंसा करने वाले आदमी को सजा भी दिलावाने के लिए आगे आएंगी.

## आत्म निर्भर बनाना

हमारे देश में लड़कियों को बचपन से ही सिखाया जाता है कि उन्हें आगे जाकर केवल घर की ही देखभाल करनी है. अभी भी गांव में पढ़ाई करने से ज्यादा लड़कियों को घर के काम सिखाए जाते हैं. जो ना सिर्फ लड़कियों के भविष्य के लिए गलत हैं. बल्कि देश के लिए भी नुकसानदेह है. देश में अशिक्षित लड़कियां होने का मतलब है कि देश की करीब 40 प्रतिशत आबादी का अशिक्षित होना. अगर हम अपने देश की लड़कियों को आत्म निर्भर नहीं बनने देंगे, तो हमारे देश की महिलाएं केवल रसोई तक ही समिति रह जाएंगी.

दुनियाभर में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए बहुत सारे कामों एवं योजनाओं को लागू किया जा रहा है. वहीं आठ मार्च के दिन को महिलाओं के लिए अर्पित किया हुआ है. इस दिन दुनिया के हर कोने में महिलाओं के लिए कई कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है. इस दिन को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के नाम से मनाए जाता है. वहीं हर देश में विशेष रूप आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों के जरिए महिलाओं के विकास पर जोर दिया जाता है. महिला आयोग और महिला की सहायता के लिए बनाए गए कई संगठनों के बारे में सुना होगा. लेकिन ज़्यादा आप ने कभी पुरुष के लिए बनाए गए किसी संगठन के बारे में सुना है. जो कि उनकी मदद के लिए बनाया गया हो. महिलाओं के लिए बनाए गए संगठनों की आखिर हमें ज्यों जरूरत पड़ती है? ज्यों हमारे देश की महिला इतनी ताकतवर नहीं है कि वो अपने आप ही हर चीज से निपट सकें.



### गरीबी कम करने

महिला सशक्तिकरण का जो अगला सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य है, वो गरीबी से जुड़ा हुआ है. अक्सर देखा गया है कि इतनी महंगाई के जमाने में कभी-कभी, परिवार के पुरुष सदस्य द्वारा अर्जित धन परिवार की मांगों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं होता है. वहीं महिलाओं की अतिरिक्त आय परिवार को गरीबी के रास्ते से बाहर आने में मदद करता है. इसलिए गरीबी को कम करने के लिए भी महिलाओं का शिक्षित होने के साथ-साथ कामकाजी होना भी जरूरी है.

### प्रतिभाशाली

कई ऐसी लड़कियां होती है, जिनमें कई प्रतिभा होती हैं. लेकिन सही मागर्दशन और शिक्षा ना मिल पाने के चलते वो अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल नहीं कर पाती हैं. इसलिए अगर महिलाओं का सहीं से सशक्तिकरण कर दिया जाए, तो महिला अपने हुनर की पहचान कर सकेंगी. जिससे देश को भी प्रतिभाशाली महिलाएं मिलेंगे. जो कि देश के विकास के लिए कार्य करेंगी.

### समाज में समानता मिलना

महिला सशक्तिकरण करने का जो सबसे बड़ा लक्ष्य है. वो महिलाओं को पुरुष के समान इस समाज में समानता देना है. अभी भी दुनिया में ऐसे कई देश हैं, जहां पर महिला को पुरुषों की तरह अधिकार नहीं दिए गए हैं. महिलाएं अभी भी केवल गुलामों की तरह कार्य करती हैं. उनको ना अपनी बात कहने की और ना कुछ निर्णय लेनी की आजादी दी गई है. वहीं महिला सशक्तिकरण के जरिए ऐसी महिलाओं का विकास करने पर ही जोर दिया जाता है. ताकि ये महिलाएं बोलने की आजादी का लाभ उठा सकेंगी. अपनी राय खुलकर समाज के सामने रख सकें.

### भारत में महिलाओं के लिए चलाई गई योजना

भारत सरकार ने देश की महिलाओं के विकास के लिए कई सारी योजनाएं चलाई हैं. इन योजनाओं की मदद से सरकार महिलाओं की मदद कर उनका सशक्तिकरण करना चाहती हैं. वहीं इन योजना का बारे में नीचे जानकारी दी गई है.

### नेशनल मिशन फॉर इम्पॉवरमेंट ऑफ वूमन

इस मिशन को महिलाओं का सशक्तिकरण करने के लक्ष्य से भारत सरकार ने शुरू किया था. 15 अगस्त 2011 को शुरू किए गए इस मिशन को राष्ट्रीय और राज्य दोनों लेवल पर शुरू किया गया था. इस मिशन की मदद से महिलाओं को आत्म निर्भर बनाया जा रहा है.

### स्वाधार गृह योजना

इस योजना के अंतर्गत 18 वर्ष के ऊपर की आयु वाली लड़कियों को रहने के लिए आवास दिए जाते हैं. ये योजना उन लड़कियों के लिए चलाई गई है, जो कि बेघर हो गई हैं. आवास के अलावा इस योजना के अंतर्गत भोजन, कपड़े, स्वास्थ्य सुविधाएं और उनकी आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा भी सुनिश्चित की जाती है.

### वन स्टॉप सेंटर योजना

इस योजना की मदद से घरेलू हिंसा का सामना कर रही महिलाओं को सहायता प्रदान की जाती है. इतना ही नहीं इस हिंसा से ग्रस्त महिलाओं को चिकित्सा, कानूनी,

मनोवैज्ञानिक और परामर्श सहित अन्य सहायता भी दी जाती हैं. ये योजना महिलाओं के लिए किसी वरदान से कम नहीं है.

### बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ योजना

लड़कियों के कल्याण और उनकी पढ़ाई के प्रति लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने के लक्ष्य से बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ योजना को शुरू करा गया था. साल 2015 में इस योजना की चलाया गया था. इस योजना के जरिए लड़कियों के परिवार वालों को उन्हें शिक्षित करने के लिए प्रोत्सहित किया जाता है.

### कार्य महिला छात्रावास योजना

जो महिलाएं अपने परिवार से दूर रहकर कार्य कर रही हैं, उन महिलाओं के लिए इस योजना को शुरू किया गया है. इस योजना के अंतर्गत कोई भी कामकाजी महिला को रहने की सुविधा सरकार द्वारा मुहैया कराई जाती है. महिला बिना किसी डर के सरकार द्वारा खोले गए इन छात्रावास में रहकर अपनी नौकरी जारी रख सकती हैं.

### महिला हेल्पलाइन योजना

साल 2015 में शुरू की गई इस योजना को हिंसा से प्रभावित महिलाओं के लिए बनाया गया है. इस योजना की मदद से घरेलू हिंसा से प्रभावित कोई भी महिला 24 घंटे टोल-फ्री टेलीकॉम सेवा पर फोन कर मदद मांग सकती है. कोई भी महिला कभी भी 181 नंबर पर फोन कर किसी भी प्रकार की सहायता पुलिस से ले सकती है.

### राजीव गांधी राष्ट्रीय आंगनवाड़ी योजना

ऑफिसों में काम करने वाली माताओं के लिए इस योजना को चलाया गया है. अक्सर कामकाजी महिलाएं अपने बच्चों को लेकर परेशान रहती हैं. इस योजना के जरिए कामकाजी महिलाएं अपने बच्चों को नर्सरी में छोड़ सकती हैं. जहां पर उनके बच्चों की देखभाल की जाएगी. वहीं शाम को अपना काम खत्म करके महिलाएं अपने बच्चों को वापस अपने साथ घर ले जा सकती हैं. देखभाल की सुविधा के अलावा इन नर्सरियों में बच्चों को बेहतर पोषण, प्रतिरक्षण सुविधाओं, सोने के लिए सुविधा और इत्यादि सुविधा प्रदान की जाती हैं.

### अंतराष्ट्रीय महिला दिवस

दुनियाभर में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए बहुत सारे कामों एवं योजनाओं को लागू किया जा रहा है. वहीं आठ मार्च के दिन को महिलाओं के लिए अर्पित किया हुआ है. इस दिन दुनिया के हर कोने में महिलाओं के लिए कई कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है. इस दिन को अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के नाम से मनाए जाता है. वहीं हर देश में विशेष रूप आयोजित किए जान वाले कार्यक्रमों के जरिए महिलाओं के विकास पर जोर दिया जाता है.

वहीं जब हमारे देश की महिलाएं शिक्षित हो जाएंगी. अभी हम कहे सकते हैं कि हमारे देश में महिलाओं के हालात बेहतर होते जा रहे हैं. जिस तरह पुरुषों को किसी भी मदद की जरूरत नहीं होती है. ठीक उसी तरह एक ऐसा दिन भी आएगा जब महिलाओं को भी किसी भी चीज का हल निकालने के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहना होगा. और उस दिन महिलाओं के सशक्तिकरण का देखा गया ये सपना सच हो सकेगा.

## सेन्सर टाइम्स

रीस सरीफ फोटो

# महिलाओं के सशक्तिकरण की सिर्फ बातें ही होती हैं, हकीकत कुछ और है



महिलाओं के हित में कुछ अच्छी व कुछ बुरी खबरें आ रही हैं। अच्छी खबर यह है कि संसद में महिला सांसदों की संख्या बढ़ी है। वहीं सुप्रीम कोर्ट ने महिलाओं को सेना में स्थाई कमीशन देने का रास्ता साफ कर दिया है। अपने एक फैसले में देश की शीर्ष अदालत ने महिलाओं को सेना में स्थाई कमीशन देने का आदेश दिया है। जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ और जस्टिस अजय रस्तोगी की बेंच ने फैसला सुनाते हुए कहा कि सेना में महिला अधिकारियों को नियुक्ति विकासवादी प्रक्रिया है।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि सभी नागरिकों को अवसर की समानता, लैंगिक न्याय सेना में महिलाओं की भागीदारी का मार्गदर्शन करेगा। महिलाओं की शारीरिक विशेषताओं पर केंद्र के विचारों को कोर्ट ने खारिज किया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि केंद्र दृष्टिकोण और मानसिकता में बदलाव करे। सेना में सही मायने में समानता लानी होगी। केंद्र सरकार पर नाराजगी जाहिर करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि स्थाई कमीशन देने से इंकार स्टीरियोटाइप पूर्वाग्रहों का प्रतिनिधित्व करते हैं। आज हर क्षेत्र में महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं।

इसी दौरान महिलाओं को शर्मसार करने वाली कुछ बातें भी सामने आई हैं। गुजरात के सूरत में महिला प्रशिक्षु क्लकों के साथ अभद्रता की घटना सामने आयी है। जिससे सभ्य माने जाने वाले समाज का सिर शर्म से झुक गया है। सूरत नगर निगम में प्रशिक्षु क्लकों की शारीरिक जांच के नाम पर उन्हें निर्वस्त्र कर घंटों कतार में खड़ा रहने के लिए मजबूर किया गया। इतना ही नहीं उस दौरान ना तो उनकी निजता का ख्याल रखा गया और ना ही उनके साथ संवेदनशीलता दिखाई गई। उनसे आपत्तिजनक सवाल किए गए।

प्रशिक्षु क्लकों को मेडिकल टेस्ट के लिए अस्पताल के प्रसूति विभाग में ले जाया गया। जहां उन्हें 10-10 के समूह में बांट कर सारे कपड़े उतारने को कहा गया। जिस कमरे में उन्हें निर्वस्त्र खड़ा करवाया गया उस कमरे का दरवाजा तक ठीक से बंद नहीं किया गया था। वहां उनकी प्राइवैसी तक का ख्याल नहीं रखा गया। जांच के दौरान महिला चिकित्सकों ने अविवाहित महिलाओं की भी गर्भावस्था से जुड़ी जांच की और उनसे आपत्तिजनक सवाल पूछे। जिससे उन्हें असहज स्थिति का सामना करना पड़ा। घंटों तक उन्हें बिना कपड़ों के खड़े रहने के लिए मजबूर किया गया।

उससे पूर्व गुजरात में भुज शहर के श्री सहजानंद गर्ल्स इंस्टीट्यूट से शर्मनाक मामला

सामने आया था। वहां हॉस्टल में 68 लड़कियों के इनर वियर उतरवाए गए। कथित तौर पर ऐसा इसलिए किया गया जिससे यह पता लगाया जा सके कि वे मासिक धर्म से तो नहीं हैं। लड़कियों के इनर वियर उतरवाने का यह मामला सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बनने से सरकार की नौद खुली व मामले को दबाने के लिये जांच कमेटी बना दी गयी है। जो अपनी जांच रिपोर्ट देने में महीनों लगा देगी तब तक लोग उस घटना को भुला चुके होंगे।

गत वर्ष महाराष्ट्र के बीड़ जिले में महिलाओं द्वारा पीरियड से बचने के लिए गर्भाशय निकलवाने के मामले सामने आए थे। बताया गया था कि महिलाएं माहवारी के कारण लगने वाले जुर्माने और काम में पड़ने वाले व्यवधान से बचने के लिए ऐसा कर रही थीं। बीड़ जिले में गन्ने के खेतों में काम करने वाली 4605 महिलाओं के गर्भाशय निकाल दिए गए ताकि माहवारी के चलते उनके काम में ढ़िलाई ना आए और उन्हें जुर्माना न भरना पड़े।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार महिलाओं के खिलाफ अपराधों में लगातार तीसरे साल भी वृद्धि देखने को मिली है। इसके मुताबिक 2015 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के 3 लाख 29 हजार 243 मामले दर्ज किए गए थे। 2016 में 3 लाख 38 हजार 954 मामले दर्ज किए गए थे। जबकि 2017 में 3 लाख 59 हजार 849 मामले दर्ज किए गए। आंकड़ों के मुताबिक 2017 में भारत में 32,559 बलात्कार के मामले रिपोर्ट हुए थे। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक, अधिकतम मामले उत्तर प्रदेश में 56 हजार 11 में दर्ज किए गए। उसके बाद महाराष्ट्र में 31 हजार 979 मामले दर्ज किए गए। वहीं पश्चिम बंगाल में 30 हजार 992, मध्य प्रदेश में 29 हजार 778, राजस्थान में 25 हजार 993 और असम में 23 हजार 82 मामले दर्ज किए गए। इन अपराधों में हत्या, बलात्कार, दहेज हत्या, आत्महत्या के लिए उकसाना, एसिड हमले, महिलाओं के खिलाफ कूरता और अपहरण आदि शामिल है।

इसके इतर सत्रहवीं लोकसभा में महिला सांसदों की संख्या बढ़कर 78 हो गई जो अब तक की सबसे अधिक संख्या है जबकि 2014 में जहां 62 महिला सांसद संसद पहुंची थीं। हालांकि वृहद स्तर पर देखें तो यह संख्या अभी भी कम है क्योंकि यह आनुपातिक प्रतिनिधित्व के आस-पास भी नहीं है। यदि दुनिया भर के आंकड़ें देखें तो भारत में महिला सांसदों का औसत सबसे कम है। ध्यान देने वाली बात यह है कि भारत में जहां पूरे संसद की संख्या का केवल 14 फीसदी महिला

सांसद है। वहीं रवांडा में 61 फीसदी, दक्षिण अफ्रीका में 43 फीसदी, ब्रिटेन में 32 फीसदी, अमेरिका में 24 फीसदी और बांग्लादेश में 21 फीसदी महिला सांसद हैं।

देश में ओडीशा की बीजेडी एकमात्र ऐसी पार्टी है जिसने टिकट बंटवारे में 33 फीसदी सीटें महिलाओं को दी थीं। यानि 7 महिला उम्मीदवार मैदान में उतारे थे। उसी तरह पश्चिम बंगाल की तृणमूल कांग्रेस ने भी 42 में से 17 महिला उम्मीदवारों को टिकट दिया था। जबकि बीजेपी ने 437 में से 53 महिलाओं को व कांग्रेस ने 423 में से 54 महिलाओं को टिकट दिया था। वर्ष 1962 से अभी तक देश में करीबन 600 महिलाएं सांसद के रूप में चुनी गई हैं। मगर देश के 543 निर्वाचन क्षेत्रों में से 48.4 फीसदी संसदीय क्षेत्रों ने 1962 के बाद से अब तक किसी महिला को सांसद के रूप में नहीं चुना है।

भारत में नारी को देवी का दर्जा दिया गया है मगर वर्तमान में यह बातें सिर्फ किताबों तक सीमित रह गयी हैं। आये दिन महिलाओं पर अत्याचार की घटनायें होना आम बात हो गयी है। दिल्ली में सामूहिक बलात्कार की शिकार हुयी निर्भया के गुनहगारों को गत आठ वर्षों बाद भी अभी तक फांसी नहीं दी जा सकी है। जबकि निर्भया आंदोलन का फायदा उठाकर नेता बने लोग सत्ता का लाभ उठा रहे हैं। कानूनी पेचीदगियों का लाभ उठाकर निर्भया के गुनहगारों को फांसी देने की तिथि बार-बार आगे खिसकायी जा रही हैं। इससे अपराधियों के हौसले बढ़ते हैं। संसद में महिलाओं की संख्या में बढ़ोत्तरी होना एक शुभ संकेत है। मगर आज भी संसद में महिलाओं के आरक्षण की बात पर सभी राजनीतिक दल पीछे खिसकने लगते हैं। कोई भी पार्टी महिला आरक्षण विधेयक को आगे बढ़ाना नहीं चाहती है। कई राजनीतिक दलों की मुखिया महिलायें हैं मगर महिलाओं को आरक्षण दिलवाने की बात पर वो भी चुप्पी साधकर सरकार की हां में हां मिलाने लगती हैं। इसी कारण संसद में महिलाओं को आरक्षण देने का मामला वर्षों से लम्बित है।

पंचायती राज व स्वायत्त शासन संस्थानों में महिलाओं को कुछ आरक्षण देकर सभी राजनीतिक दल व प्रदेशों की सरकारें अपना कर्तव्य पूरा कर लेती हैं। देश में महिलायें हर क्षेत्र में पुरुषों के कंधे से कंधा मिला कर काम कर रही हैं। गत वर्षों में तो महिला खिलाड़ियों ने कई अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पुरुषों से अच्छा प्रदर्शन कर देश का दुनिया भर में मान बढ़ाया है। इसके उपरान्त भी महिलाओं को समानता के लिये संघर्ष करना पड़ता है जो देश व समाज के लिये अच्छी बात नहीं है।



पाकिस्तान सरकार और आईएसआई के साथ अपनी नजदीकियों के लिए जानी जाने वाली ब्रिटिश सांसद डेबी अब्राहम को भारत ने दिल्ली पहुँचने पर एयरपोर्ट से ही उलटे पाँव लौटने पर मजबूर कर दिया तो वह भड़क गयीं और भारत सरकार पर तरह-तरह के आरोप लगाने लगीं। डेबी अब्राहम सिर्फ मोदी सरकार की आलोचक नहीं हैं बल्कि वह भारत विरोधी हैं, वह भारत की संप्रभुता की विरोधी हैं, वह भारत के विकास की विरोधी हैं, वह भारत की खुशहाली की विरोधी हैं। अपने पाकिस्तानी आकाओं के इशारों पर जब-तब ब्रिटेन में कश्मीर मुद्दे पर झूठ फैलाने वाली डेबी अब्राहम के बारे में खुफिया एजेंसियों के पास पूरे सबूत थे कि वह किस प्रकार भारत विरोधी ताकतों के हाथों में खेल रही हैं और इसी वजह से उनका बिजनेस वीजा कैंसल कर दिया गया जोकि 5 अक्टूबर 2020 तक वैध था। भारत ने वीजा रद्द करने के फैसले की जानकारी डेबी अब्राहम को ईमेल के जरिये 14 फरवरी को ही दे दी थी और उस ईमेल को देख भी लिया गया था लेकिन उसके बावजूद भारत को बदनाम करने के अभियान के लिए डेबी ने फ्लाइट पकड़ी और उतर गयीं इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर। डेबी ने सोचा कि जैसे गुलामी के समय भारत में ब्रिटिशों का जलवा होता था वैसा ही माहौल होगा। लेकिन डेबी भूल गयीं कि यह नया भारत है, संप्रभु भारत है जिसका अपना संविधान है, अपने नियम कायदे हैं और वह हर किसी पर समानता के साथ लागू होते हैं। डेबी को हवाई अड्डे पर जब बताया गया कि वह यहां से बाहर नहीं निकल सकतीं और उन्हें वापस जाना होगा तो वह अधिकारियों पर ही भड़क गयीं। वह अपना बिजनेस वीजा दिखाते लगीं तो उन्हें बताया गया कि यह रद्द किया जा चुका है इस पर उन्होंने रद्द करने का कारण पूछा। अब डेबी अब्राहम यहां सवाल हम आपसे ही पूछना चाहेंगे कि ब्रिटिश संसद में होने के बावजूद क्या आप इतनी सी बात भी नहीं जानतीं कि किसी को वीजा देना, उसकी अवधि बढ़ाना या उसे अचानक रद्द करना किसी भी देश का संप्रभु अधिकार है।

डेबी अब्राहम शुरू से ही भारत विरोधी गतिविधियों में शामिल रही हैं लेकिन भारत ने उदारता दिखाते हुए उन्हें पिछले साल ई-बिजनेस वीजा जारी किया था जो सिर्फ कारोबारी बैठकों में भाग लेने के लिए था लेकिन डेबी इस वीजा का इस्तेमाल अपने कश्मीर संबंधी अभियान के लिए करने चली थीं। उनकी दलील थी कि मैं सिर्फ अपने दोस्तों और परिजनों से मिलना चाहती हूँ लेकिन बिजनेस वीजा के नियमों में दोस्त और परिजन से मुलाकात आती ही नहीं।

डेबी अब्राहम को सांसद कैसे चुन लिया गया यह अपने आप में बड़ा सवाल है क्योंकि उन्हें यह पता ही नहीं था कि ब्रिटिश नागरिकों के लिए भारत में आगमन पर वीजा सुविधा उपलब्ध ही नहीं है। उनकी यह अज्ञानता तब प्रकट हुई जब वह एयरपोर्ट पर अपने लिये आगमन पर वीजा सुविधा मांगने लग गयीं। वहां उन्हें बताया गया कि वह सामान्य वीजा के लिए आवेदन कर सकती हैं और वह भी नियमानुसार और यह देना है या नहीं, इसका फैसला भारत की सरकार ही करेगी।

खैर...इतने ड्रामे के बाद डेबी अब्राहम को यह समझ आ गया कि भारत में अपनी दाल गलने वाली नहीं है और वह वापस लौटने लगीं लेकिन वापस वह ब्रिटेन जाने की बजाय अपने आका और दुनिया में आतंकवाद की फैक्ट्री के नाम से मशहूर पाकिस्तान पहुँच गयी। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान और विदेश मंत्री महमूद कुरैशी तथा पाकिस्तानी

## मानवाधिकार तो दिखावा है, पाक एजेंट डेबी अब्राहम का काम दुष्प्रचार फैलाना है



**कौन नहीं जानता कि ब्रिटेन की ऑल पार्टी पार्लियामेंट्री ग्रुप ऑफ कश्मीर की अध्यक्ष और लेबर पार्टी की सांसद डेबी अब्राहम पाकिस्तान के पिटू कहे जाने वाले राजा नजाबत हुसैन के माध्यम से चौबीसों घंटे पाकिस्तान के संपर्क में रहती हैं।**

सांसदों और नेताओं के साथ चर्चा कर उनके चेहरे पर खुशी आ गयी और उन्हें यह महसूस हुआ कि उन्होंने मानवाधिकारों की रक्षा के लिए बड़ा योगदान कर दिया है। डेबी अब्राहम यह सवाल आपसे हैं कि क्या आपने बलूचिस्तान के नेताओं से मुलाकात कर वहां की जनता का हाल जानने की भी कोशिश की? क्या आपने कबायली इलाकों के नेताओं से मुलाकात कर वहां के लोगों की दुर्दशा जानने की कोशिश की? जवाब होगा नहीं क्योंकि जिस आईएसआई और पाकिस्तान की सरकार से आपको फंडिंग मिलती है वह आपको वहां जाने नहीं देंगे। अपने अंदर धधकती भारत विरोध की ज्वाला लिये आप अपनी आंखों पर पट्टी बांध कर एलओसी या पीओके का दौरा कर स्वयं को भले मानवाधिकार कार्यकर्ता समझें लेकिन असल में आप दुष्प्रचार और भ्रम फैलाने का अभियान चलाने वाली नेता हैं। कौन नहीं जानता कि ब्रिटेन की ऑल पार्टी पार्लियामेंट्री ग्रुप ऑफ कश्मीर की अध्यक्ष और लेबर पार्टी की सांसद डेबी अब्राहम पाकिस्तान के पिटू कहे जाने वाले राजा नजाबत हुसैन के माध्यम से चौबीसों घंटे पाकिस्तान के संपर्क में रहती हैं। यह जो राजा नजाबत हुसैन है वह जम्मू-कश्मीर के अधिकारों के लिए बने एक स्वयंभू संगठन का चेयरमैन है और इस संगठन को पूरी फंडिंग आईएसआई से मिलती है।

डेबी अब्राहम को कश्मीर राग इतना भाता है कि वह सदैव कश्मीर कश्मीर की रट लगाये रहती हैं। हम आपको बता दें कि डेबी अब्राहम उन ब्रिटिश सांसदों के दल में शामिल थीं जिन्होंने पिछले साल अगस्त में जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाने पर चिंता जताते हुए औपचारिक पत्र जारी किये थे। डेबी अब्राहम ने ब्रिटेन के तत्कालीन विदेश मंत्री डोमिनिक रॉब को पत्र लिख कर कहा था कि हम भारत के गृह मंत्री

अमित शाह की इस घोषणा से बहुत चिंतित हैं कि जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा प्रदान करने वाला अनुच्छेद 370 समाप्त कर दिया गया है। डेबी अब्राहम जी अनुच्छेद 370 को समाप्त करना या जारी रखना पूरी तरह भारत का आंतरिक मामला था, है और रहेगा। पूरी दुनिया भारत के इस अधिकार का सम्मान करती है और आपको भी करना होगा क्योंकि आप भी इसी ग्रह की प्राणी हैं। चलते चलते आपको यह भी बता दें कि डेबी अब्राहम के बारे में यह जानना आपको भी रुचिकर लगा कि उनके संसदीय क्षेत्र में अधिकतर पाकिस्तानी मूल के लोग रहते हैं।

बहरहाल, यह देखकर अच्छा लगा कि कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अभिषेक मनु सिंघवी ने सरकार के इस कदम का समर्थन करते हुए कहा, 'डेबी अब्राहम को भारत द्वारा वापस भेजा जाना वाकई में जरूरी था क्योंकि वह सिर्फ एक सांसद नहीं, बल्कि पाकिस्तान की प्रतिनिधि हैं।'

भारत की संप्रभुता पर हमला करने के हर प्रयास को विफल करना होगा। हालांकि इस मामले में कांग्रेस के अन्य नेता शशि थरूर का विचार कुछ और ही था। जहाँ तक डेबी अब्राहम के इस आरोप कि-कश्मीर मुद्दे पर आलोचना की वजह से उन्हें एंट्री नहीं दी गई है' का सवाल है तो उन्हें यह पता होना चाहिए कि भारत गत अक्टूबर से इस साल जनवरी तक तीन विदेशी प्रतिनिधिमंडलों को भारत का दौरा करा चुका है और उसमें भी कई सदस्य कश्मीर पर प्रतिबंधों के विरोध में थे लेकिन उनका विरोध सिर्फ प्रतिबंधों पर था वह लोग पाकिस्तान परस्त नहीं थे। डेबी और अन्य में यही मूल फर्क है कि अन्य विदेशी नेता या राजनयिक कश्मीर के हालात से परिचित होने आये थे और डेबी अब्राहम यहां पाकिस्तान के एजेंडे को बढ़ावा देने के लिए आई थीं।

**सरकार की कश्मीर नीति पर उठाए सवाल, ब्रिटिश सांसद को एयरपोर्ट से वापस लौटाया**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार पर कश्मीर नीति को लेकर कई तरह के सवाल खड़े होते आए हैं। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के बाद दुनिया के कई देशों ने इस फैसले पर सवाल खड़े किए हैं। भारत के बुलावे पर यूरোपियन यूनियन के कुछ सांसदों ने जम्मू-कश्मीर का दौरा भी किया, लेकिन सोमवार को ब्रिटेन की लेबर पार्टी की सांसद डेबी अब्राहम को भारत आने से रोकने का फैसला करते हुए दिल्ली एयरपोर्ट से ही वापस भेज दिया गया।

एयरपोर्ट से ही वापस भेजे जाने के मसले पर ब्रिटिश सांसद ने सरकार के फैसले पर सवाल उठाए हैं। इस बीच इस प्रकरण पर ब्रिटिश हाई कमिशन के प्रवक्ता ने कहा कि हम यह समझने के लिए भारतीय अधिकारियों के संपर्क में बने हुए हैं कि सांसद डेबी अब्राहम को भारत में प्रवेश से क्यों मना किया गया है। नई दिल्ली एयरपोर्ट पर रहने के दौरान हमने उन्हें कांसुलर की सुविधा भी प्रदान की थी। हालांकि, ब्रिटिश सांसद अब्राहम को पिछले हफ्ते 14 फरवरी को यह हिंट दे दिया गया था कि उनका वीजा कैंसिल किया जा सकता है।

डेबी अब्राहम ब्रिटिश सांसद हैं और ऑल पार्टी पार्लियामेंट्री ग्रुप ऑफ कश्मीर की अध्यक्ष हैं। सोमवार सुबह करीब 8.50 पर जब डेबी अब्राहम दिल्ली एयरपोर्ट पहुंचीं, तो उन्हें बताया गया कि उनका वीजा कैंसिल कर दिया गया है। हालांकि, ये वीजा अक्टूबर 2020 तक मान्य था।

डेबी अब्राहम शुरू से ही भारत विरोधी गतिविधियों में शामिल रही हैं लेकिन भारत ने उदारता दिखाते हुए उन्हें पिछले साल ई-बिजनेस वीजा जारी किया था जो सिर्फ कारोबारी बैठकों में भाग लेने के लिए था लेकिन डेबी इस वीजा का इस्तेमाल अपने कश्मीर संबंधी अभियान के लिए करने चली थीं। उनकी दलील थी कि मैं सिर्फ अपने दोस्तों और परिजनों से मिलना चाहती हूँ लेकिन बिजनेस वीजा के नियमों में दोस्त और परिजन से मुलाकात आती ही नहीं। डेबी अब्राहम को सांसद कैसे चुन लिया गया यह अपने आप में बड़ा सवाल है क्योंकि उन्हें यह पता ही नहीं था कि ब्रिटिश नागरिकों के लिए भारत में आगमन पर वीजा सुविधा उपलब्ध ही नहीं है। उनकी यह अज्ञानता तब प्रकट हुई जब वह एयरपोर्ट पर अपने लिये आगमन पर वीजा सुविधा मांगने लग गयीं। वहां उन्हें बताया गया कि वह सामान्य वीजा के लिए आवेदन कर सकती हैं और वह भी नियमानुसार और यह देना है या नहीं, इसका फैसला भारत की सरकार ही करेगी।



# शिक्षित समाज में तलाक की प्रवृत्ति बढ़ी है, मोहन भागवत ने गलत क्या कहा ?

हमारे देश में बड़े-बुजुर्ग कहते हैं कि जहां प्यार है वहीं सुख-शान्ति है और जहां शान्ति है वहीं समृद्धि। इसी तरह संयुक्त परिवार हमारी उन्नति और हमारा विकास, समाज के विकास और इसी तरह समाज का उत्थान देश के ऊंचा उठने से जुड़ा है।



समाज में अलग-अलग आस्थाओं, विभिन्न रुचियों, स्वभाव, गुण-दोष के लोग निवास करते हैं। हमें किसी पर अपनी मर्जी या विचार थोपने का प्रयास नहीं करना चाहिए बल्कि इन विविधताओं को प्रेम के धागे में पिरो कर एक ऐसे कण्ठाहार का निर्माण करना चाहिए जो देश व समाज की शोभा बढ़ाए। सर्वमान्य और सर्वोचित निर्णय ठण्डे दिमाग से ही लिये जा सकते हैं, यह शिव परिवार बताता है। महाशिव के मस्तक पर चन्द्रमा और गंगा का होना इस बात का संकेत है कि मस्तिष्क को सदा शीतल रखो। चन्द्रमा और गंगाजल दोनों में असीम शीतलता है। घर हमेशा ठण्डे दिमाग से ही चलते हैं। गणेश जी के शरीर से बड़ा सिर बताता है कि शक्ति से बुद्धि बड़ी, उनके बड़े कान कहते हैं कि सुनने की शक्ति विकसित करो।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने हाल ही में एक जगह अपने प्रबोधन में कहा है कि शिक्षित समाज में तलाक की प्रवृत्ति अधिक देखने को मिल रही है। हमारी शिक्षा पद्धति समाज को स्वावलम्बी तो बना रही है परन्तु कहीं न कहीं घरों में प्रेम, सहिष्णुता, सहनशीलता और समरसता खोती जा रही है। हाल ही में एक समाचार सुनने को मिला कि शादी के तीसरे दिन ही पति-पत्नी में तलाक हो गया। कारण बताया कि नवव्याहताओं को एक-दूसरे की आदतें पसन्द नहीं आईं। दोनों के निजी अहं इतने भारी पड़ गए कि सात दिनों का रिश्ता सात दिन भी नहीं चल पाया। सन्तान द्वारा वृद्ध माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार की घटनाएं आज किसी को चौंकाती नहीं, क्योंकि ये घर-घर की कहानी हो चुकी। अभी चण्डीगढ़ में एक महिला ने प्रेम सम्बन्धों में अन्धी हो कर अपने दो दूधमुँहे बच्चों की हत्या कर दी। माता भी कुमाता हो गई। सामाजिक स्तर पर भी देखने को मिलता है कि जातिवाद व छूआछूत के चलते किस तरह अत्याचारों की घटनाएं देखने, सुनने व पढ़ने को मिलती रहती हैं।

महाशिवरात्रि पर्व जो सन्देश देती है कि हम किस तरह परिवार, हमारे परिवार, किस तरह मोहल्ले, किस भान्ति नगर और देश-प्रदेश के साथ मिलजुल कर रह सकते हैं। बहुत शिक्षाप्रद है भगवान शिव का परिवार। परिवार में जितने सदस्य उतनी रुचियां, सभी की अलग-अलग प्रकृति, विभिन्न प्रकार के व्यवहार परन्तु इनके बावजूद सभी का एक छत के नीचे रहना समाज को बहुत कुछ सिखाता है।

देखें तो शिव परिवार में शामिल हैं माँ पार्वती, विनायक जी, भगवान कार्तिकेय, शिव के गले में फनियर नाग, जटा में गंगा व चन्द्रदेव, गणेश जी का वाहन मूषक, कार्तिकेय का वाहन मयूर, शिव का वाहन नन्दी, पार्वती का वाहन सिंह। इनमें प्राकृतिक रूप से सांप दुश्मन है चूहे का तो मोर की शत्रुता है भुजंग से। इसी तरह सिंह का आहार है बैल, तो शिव की जटा में अग्निपुंज चन्द्रदेव व गंगा विभिन्न तासीर के हैं। इतने विरोधाभास के बाद भी

सभी न केवल एक परिवार के सदस्य हैं बल्कि सभी सुनने में नहीं आया कि इस परिवार में कभी फूट पड़ी हो। एक दूसरे के दुश्मन होते हुए आपस में मिलजुल कर रहते हैं। परिवार में रहने-सहन और खानपान में काफी विषमता होने के बावजूद भी सभी प्रेम, एकता और भाईचारे की भावना से रहते हैं।

सामाजिक तौर पर देखें तो परिवारों में भी यह जरूरी है अलग-अलग विचारों, अभिरूचियों, स्वभावों के बावजूद हम लोग हिलमिल कर रहें, अपनी सोच दूसरों पर न थोपी जाये और सबसे खास बात यह कि मुखिया और अन्य बड़े सदस्यों के गले में गरल थामे रखने का धीरज और सबको साथ लेकर चलने की आदत हो तभी संयुक्त परिवार चल सकते हैं। शिव परिवार के विभिन्न विचारों वाले मोतियों को एक माला में पिरोते हैं भगवान शिव जैसे मजबूत सूत्रधार।

शिव जिनकी अपनी निजी महत्वाकांक्षा नहीं, परिवार की रुचि ही उनको मन भाती है। वो दूसरे के लिए विष पीने को तैयार हैं, स्वभाव इतना सरल कि भस्मासुर तक को वरदान दे दे और क्रोध इतना कि तीसरा नेत्र खोले तो तीन लोक भस्मीभूत हो जाएं। शिव अपने परिवार के सभी सुख-सुविधाएं उपलब्ध करवाते हैं परन्तु खुद मृगचरम में जीवन व्यतीत करते, रूखा-सूखा खा कर गुजारा करते हैं। मीठे फल परिवार को और भांग, धतूरा व आक का सेवन खुद करते हैं। परिवार के सदस्यों की इतनी चिन्ता कि अपनी शादी में रूठ जाने पर नन्दी बैल की भी लिलावरी करते दिखते हैं। परिवार के मुखिया को शिव की भान्ति जीवन जीने की कला आनी चाहिए। वह अपने परिवार की इच्छा पर अपनी इच्छा हावी न होने दे, संकट आए तो उससे निपटने को तैयार रहे और सभी की सुने-माने परन्तु व्यवहार धर्मानुसार करे।

शिव परिवार हमारे परिवार तक ही सीमित नहीं होना चाहिए वरन हमारे देश में विभिन्न धर्मों, पन्थों, सम्प्रदायों, जाति और विविधताओं के बीच एकता व सन्तुलन शिव परिवार की

तरह जरूरी है। समाज में अलग-अलग आस्थाओं, विभिन्न रुचियों, स्वभाव, गुण-दोष के लोग निवास करते हैं। हमें किसी पर अपनी मर्जी या विचार थोपने का प्रयास नहीं करना चाहिए बल्कि इन विविधताओं को प्रेम के धागे में पिरो कर एक ऐसे कण्ठाहार का निर्माण करना चाहिए जो देश व समाज की शोभा बढ़ाए। सर्वमान्य और सर्वोचित निर्णय ठण्डे दिमाग से ही लिये जा सकते हैं, यह शिव परिवार बताता है। महाशिव के मस्तक पर चन्द्रमा और गंगा का होना इस बात का संकेत है कि मस्तिष्क को सदा शीतल रखो। चन्द्रमा और गंगाजल दोनों में असीम शीतलता है। घर हमेशा ठण्डे दिमाग से ही चलते हैं। गणेश जी के शरीर से बड़ा सिर बताता है कि शक्ति से बुद्धि बड़ी, उनके बड़े कान कहते हैं कि सुनने की शक्ति विकसित करो।

संयुक्त परिवार भारतीय संस्कृति के आधार हैं। संस्कृति का विकास पुस्तकें पढ़ने या शिक्षा के पाठ्यक्रमों से नहीं बल्कि परिवारों में होता है। बच्चे को जीवन जीने का ढंग दादा-दादी की वह सरल-सुन्दर कहानियां सिखाती हैं जो रात के समय एक ही खाट पर सोते हुए सुनाई जाती हैं। होली-दीवाली के दिन घर में होने वाली चहल-पहल व पकने वाले पकवान, होने वाले पूजा-पाठ को देख कर बच्चे रामायण व महाभारत की कथाएं कब कण्ठस्थ कर जाते हैं पता भी नहीं चलता। परिवार ही वह जगह है जहां व्यक्ति को जीवन जीने की हर सुविधा, अवसर व साधन मिलते हैं। हमारे समाज में जो सामाजिक आचार-विहार प्रचलित है, जिसे हम भारतीय संस्कृति कहते हैं वह संयुक्त परिवारों की ही देन है।

आजकल महंगाई व आर्थिक परेशानी का रोगा लगभग हर परिवार में रोया जाता है परन्तु भारतीय अर्थशास्त्र कहता है कि संयुक्त परिवार में रह कर हम इन परेशानियों से आसानी से पार पा सकते हैं। अकसर कहा जाता है कि चाहे चार व्यक्तियों की खाना बने या छह का रसोई का खर्च लगभग वही रहता है परन्तु अगर छह लोगों की अलग-अलग रसोई चले तो कुल मिला कर खर्च डेढ़ से दो

गुना तक हो जाता है। संयुक्त परिवारों में देखने में आता है कि परिवार का कोई सदस्य इतना धन अर्जित नहीं कर पाता जितना कि दूसरे परन्तु सांझे चूल्हे के चलते उसके बच्चे भी पल जाते हैं और उसका जीवन आसानी से कट जाता है। ऐसे परिवार में महिलाएं व बच्चे भी एकल व बिखरे परिवारों की तुलना में अधिक सुरक्षा महसूस करते हैं। मानव को भावनात्मक सुरक्षा भी सांझे परिवारों में ही मिलती है। एकल परिवारों में जहां कामकाजी माओं के बच्चे मातृत्व प्रेम से अतृप्त रह जाते हैं वहीं सांझे परिवार में बूआ-दादी, चाची-ताई के रूप में बच्चे को एक से अधिक माओं का प्यार नसीब होता है।

इन सब बातों के इतर यह भी व्याहारिक बात भी है कि परिवार बढ़ जाने पर इन्सान क्या करे ? तो सरल तरीका है कि परिवार का विस्तार हो। ज्ञात रहे कि विभाजन व विस्तार ऊपर से चाहे एक दिखें परन्तु इनमें जमीन आसमान का अन्तर है। यह व्यवहारिक है कि परिवार में दूसरी या तीसरी पीढ़ी का एक साथ रहना मुश्किल हो जाता है और निवास के साथ-साथ व्यवसाय की दृष्टि से भी अलग सोचना पड़ता है परन्तु यह काम प्रेम व स्नेह के आधार पर हो न कि झगड़े के।

झगड़ा कर परिवार से अलग होना विभाजन है और प्रेम से विलग होना विस्तार। विभाजन परिवार में ही दुश्मनी के बीज बोता है और विस्तार के बाद अलग होने के बाद भी उस परिवार के सदस्यों में एकात्मता बनी रहती है। बड़े-बुजुर्ग कहते हैं कि जहां प्यार है वहीं सुख-शान्ति है और जहां शान्ति है वहीं समृद्धि। इसी तरह संयुक्त परिवार हमारी उन्नति और हमारा विकास, समाज के विकास और इसी तरह समाज का उत्थान देश के ऊंचा उठने से जुड़ा है। शिवरात्रि आपके परिवार में एकता, प्रेम, स्नेह, त्याग की भावना का संचार करे और आपका कुटुम्ब समाज व देश की उन्नति का पथप्रदर्शक बने इन्हीं शुभकामनाओं के साथ, हर-हर महादेव।



(कहानी)

# स्मृति का पुजारी



महाशय होरीलाल की पत्नी का जब से देहान्त हुआ वह एक तरह से दुनिया से विरक्त हो गये हैं। यों रोज कचहरी जाते हैं अब भी उनकी वकालत बुरी नहीं है। मित्रों से राह-रस्म भी रखते हैं, मेलों-तमाशों में भी जाते हैं; पर इसलिए कि वे भी मनुष्य हैं और मनुष्य एक सामाजिक जीव है। जब उनकी स्त्री जीवित थी, तब कुछ और ही बात थी। किसी-न-किसी बहाने से आये-दिन मित्रों की दावतें होती रहती थीं। कभी गार्डन-पार्टी है, कभी संगीत है, कभी जन्माष्टमी है, कभी होली है। मित्रों का सत्कार करने में जैसे उन्हें मजा आता था। लखनऊ से सुफेदे आये हैं। अब, जब तक दोस्तों को खिला न लें, उन्हें चैन नहीं। कोई अच्छी चीज खरीदकर उन्हें यही धुन हो जाती थी कि उसे किसी को भेंट कर दें। जैसे और लोग अपने स्वार्थ के लिए तरह-तरह के प्रपंच रचा करते हैं, वह सेवा के लिए षडयन्त्र रचते थे। आपसे मामूली जान-पहचान है, लेकिन उनके घर चले जाइए तो चाय और फलों से आपका सत्कार किये बिना न रहेंगे। मित्रों के हित के लिए प्राण देने को तैयार और बड़े ही खुशमिजाज। उनके कहकहे ग्रामोफोन में भरने लायक होते थे। कोई संतान न थी, लेकिन किसी ने उन्हें दुखी या निराश नहीं देखा।

मुहल्ले के सारे बच्चे उनके बच्चे थे। और स्त्री भी उसी रंग में रंगी हुई। आप कितने ही चिंतित हों, उस देवी से मुलाकात होते ही आप फूल की तरह खिल जायेंगे। न जाने इतनी लोकोक्तियाँ कहाँ से याद कर ली थीं। बात-बात पर कहा, वतें कहती थी। और जब किसी को बनाने पर आ जाती, तो रुलाकर छोड़ती थीं। गृह-प्रबन्ध में तो उसका जोड़ न था, दोनों एक-दूसरे के आशिक थे, और उनका प्रेम पौधों के कलम की भाँति दिनों के साथ और भी घनिष्ठ होता जाता था। समय की गति उस पर जैसे आशीर्वाद का काम कर रही थी। कचहरी से छुट्टी पाते ही वह प्रेम का पथिक दीवानों की तरह घर भागता था। आप कितना ही आग्रह करें पर उस वक्त रास्ते में एक मिनट के लिए भी न रुकता था और अगर कभी महाशयजी के आने में देर हो जाती थी तो वह प्रेम-योगिनी छज्जे पर

खड़ी होकर उनकी राह देखा करती थी। और पचीस साल के अभिन्न सहचर ने उनकी आत्माओं में इतनी समानता पैदा कर दी थी कि जो बात एक के दिल में आती थी, वही दूसरे के दिल में बोल उठती थी। यह बात नहीं कि उनमें मतभेद न होता हो। बहुत-से विषयों में उनके विचारों में आकाश-पाताल का अन्तर था और अपने पक्ष के समर्थन और परपक्ष के खण्डन में उनमें खूब झॉव-झॉव होती थी। कोई बाहर का आदमी सुने तो समझे कि दोनों लड़ रहे हैं और अब हाथापाई की नौबत आनेवाली है; मगर उनके मुवाहसे मस्तिष्क के होते थे। हृदय दोनों के एक, दोनों सहृदय, दोनों प्रसन्नचित्त, स्पष्ट कहनेवाले, निःस्पृह। मानो देवलोक के निवासी हों; इसलिए पत्नी का देहांत हुआ, तो कई महीने तक हम लोगों को यह अन्देश रहा कि यह महाशय आत्महत्या न कर बैठें। हम लोग सदैव उनकी दिलजोई करते रहते, कभी एकांत में न बैठने देते। रात को भी कोई-न-कोई उनके साथ लेटता था। ऐसे व्यक्तियों पर दूसरों को दया आती ही है। मित्रों की पत्नियाँ तो इन पर जान देती थीं। इनकी नजरों में वह देवताओं के भी देवता थे। उनकी मिसाल दे-देकर अपने पुरुषों से कहतीं इसे कहते हैं प्रेम ! ऐसा पुरुष हो, तो क्यों न स्त्री उसकी गुलामी करे। जब से बीबी मरी है गरीब ने कभी भरपेट भोजन नहीं किया, कभी नींद-भर नहीं सोया। नहीं तो तुम लोग दिल में मनाते रहते हो कि यह मर जाय, तो नया ब्याह रचायें। दिल में खुश होगे कि अच्छा हुआ मर गयी, रोग टला, अब नयी-नवेली स्त्री लायेंगे।

और अब महाशयजी का पैंतालीसवाँ साल था, सुगठित शरीर था, स्वास्थ्य अच्छा, रूपवान, विनोदशील, सम्पन्न। चाहते तो तुरन्त दूसरा ब्याह कर लेते। उनके हाँ करने की देर थी। गरज के बावले कन्यावालों ने सन्देश भेजे, मित्रों ने भी उजड़ा घर बसाना चाहा; पर इस स्मृति के पुजारी ने प्रेम के नाम को दाग न लगाया। अब हफ्तों बाल नहीं बनते; कपड़े नहीं बदले जाते। घसियारों-सी सूरत बनी हुई है, कुछ परवाह नहीं। कहाँ तो मुँह-अँधेरे उठते थे और चार मील का चक्कर लगा आते

थे, कभी अलसा जाते थे तो देवीजी घुड़कियाँ जमातीं और उन्हें बाहर खदेड़कर द्वार बन्द कर लेतीं। कहाँ अब आठ बजे तक चारपाई पर पड़े करवटें बदल रहे हैं। उठने का जी नहीं चाहता। खिदमतगार ने हुक्का लाकर रख दिया, दो-चार कश लगा लिये। न लाये, तो गम नहीं। चाय आयी पी ली, न आये तो परवाह नहीं। मित्रों ने बहुत गला दबाया, तो सिनेमा देखने चले गये; लेकिन क्या देखा और क्या सुना, इसकी खबर नहीं। कहाँ तो अच्छे-अच्छे सूटों का खब्त था, कोई खुशनुमा डिजाइन का कपड़ा आ जाय, आप एक सूट जरूर बनवायेंगे। वह क्या बनवायेंगे, उनके लिए देवीजी बनवायेंगी। कहाँ अब पुराने-धुराने बदरंग, सिकुड़े-सिकुड़ाये, ढीले-ढाले कपड़े लटकाये चले जा रहे हैं, जो अब दुबलेपन के कारण उतारे-से लगते हैं और जिन्हें अब किसी तरह सूट नहीं कहा, जा सकता। महीनों बाजार जाने की नौबत नहीं आती। अबकी कड़ाके का जाड़ा पड़ा, तो आपने एक रुईदार नीचा लबादा बनवा लिया और खासे भगतजी बन गये। सिर्फ कंटोप की कसर थी। देवीजी होतीं, तो यह लबादा छीनकर किसी फकीर को दे देतीं; मगर अब कौन देखनेवाला है। किसे परवाह है, वह क्या पहनते हैं और कैसे रहते हैं। 45 की उम्र में जो आदमी 35 का लगता था, वह अब 50 की उम्र में 60 का लगता है, कमर भी झुक गयी है, बाल भी सफेद हो गये हैं, दाँत भी गायब हो गये। जिसने उन्हें तब देखा हो, आज पहचान भी न सके। मजा यह है कि तब जिन विषयों पर देवीजी से लड़ा करते थे, वही अब उनकी उपासना के अंग बन गये हैं। मालूम नहीं उनके विचारों में क्रांति हो गयी है या मृतात्मा ने उनकी आत्मा में लीन होकर भिन्नताओं को मिटा दिया है। देवीजी को विधवा-विवाह से घृणा थी। महाशयजी इसके पक्षे समर्थक थे; लेकिन अब आप भी विधवा-विवाह का विरोध करते हैं। आप पहले पश्चिमी या नयी सभ्यता के भक्त थे और देवीजी का मजाक उड़ाया करते थे। अब इस सभ्यता की उनसे ज्यादा तीव्र आलोचना शायद ही कोई कर सके। इस बार यों ही अंग्रेजों के समय-नियन्त्राण की चर्चा चल गयी। मैंने कहा, -इस विषय में

हमें अंग्रेजों से सबक लेना चाहिए। बस, आप तड़पकर उठ बैठे और उन्मत्त स्वर में बोले -कभी नहीं, प्रलय तक नहीं। मैं इस नियन्त्राण को स्वार्थ का स्तम्भ, अहंकार का हिमालय और दुर्बलता का सहारा समझता हूँ। एक व्यक्ति मुसीबत का मारा आपके पास आता है। मालूम नहीं, कौन-सी जरूरत उसे आपके पास खींच लायी है; लेकिन आप फरमाते हैं मेरे पास समय नहीं। यह उन्हीं लोगों का व्यवहार है, जो धन को मनुष्यता के ऊपर समझते हैं, जिनके लिए जीवन केवल धन है। जो व्यक्ति सहृदय है, वह कभी इस नीति को पसन्द न करेगा। हमारी सभ्यता धन को इतना ऊँचा स्थान नहीं देती थी। हम अपने द्वार हमेशा खुले रखते थे। जिसे जब जरूरत हो, हमारे पास आये। हम पूर्ण तन्मयता से उसका वृत्तान्त सुनेंगे और उसके हर्ष या शोक में शरीक होंगे। अच्छी सभ्यता है ! जिस सभ्यता की स्पिरिट स्वार्थ हो, वह सभ्यता नहीं है; संसार के लिए अभिशाप है, समाज के लिए विपत्ति है।

इस तरह धर्म के विषय में भी दम्पती में काफी वितंडा होता रहता था। देवीजी हिन्दू धर्म की अनुगामिनी थीं, आप इस्लामी सिद्धान्तों के कायल थे; मगर अब आप भी पक्षे हिन्दू हैं, बल्कि यों कहिए कि आप मानवधर्मी हो गये हैं। एक दिन बोले, -मेरी कसौटी तो है मानवता ! जिस धर्म में मानवता को प्रधानता दी गयी है, बस, उसी धर्म का मैं दास हूँ। कोई देवता हो या नबी या पैगम्बर, अगर वह मानवता के विरुद्ध कुछ कहता है, तो मेरा उसे दूर से सलाम है। इस्लाम का मैं इसलिए कायल था कि वह मनुष्यमात्र को एक समझता है, ऊँच-नीच का वहाँ कोई स्थान नहीं है; लेकिन अब मालूम हुआ कि यह समता और भाईपन व्यापक नहीं, केवल इस्लाम के दायरे तक परिमित है। दूसरे शब्दों में, अन्य धर्मों की भाँति यह भी गुटबन्द है और इसके सिद्धान्त केवल उस गुट या समूह को सबल और संगठित बनाने के लिए रचे गये हैं। और जब मैं देखता हूँ कि यहाँ भी जानवरों की कुरबानी शरीयत में दाखिल है और हरेक मुसलमान के लिए अपनी सामर्थ्य के अनुसार भेड़, बकरी, गाय, या ऊँट की

पत्नी का देहांत हुआ, तो कई महीने तक हम लोगों को यह अन्देशा रहा कि यह महाशय आत्महत्या न कर बैठें। हम लोग सदैव उनकी दिलजोई करते रहते, कभी एकांत में न बैठने देते। रात को भी कोई-न-कोई उनके साथ लेटता था। ऐसे व्यक्तियों पर दूसरों को दया आती ही है। मित्रों की पत्नियाँ तो इन पर जान देती थीं।

इनकी नजरों में वह देवताओं के भी देवता थे। उनकी मिसाल दे-देकर अपने पुरुषों से कहतीं इसे कहते हैं प्रेम ! ऐसा पुरुष हो, तो क्यों न स्त्री उसकी गुलामी करे। जब से बीबी मरी है गरीब ने कभी भरपेट भोजन नहीं किया, कभी नींद-भर नहीं सोया। नहीं तो तुम लोग दिल में मनाते रहते हो कि यह मर जाय, तो नया ब्याह रचायें। दिल में अच्छा हुआ मर गयी, रोग टला, अब नयी-नवेली स्त्री लायेंगे।



कुरबानी फर्ज बतायी गयी है, तो मुझे उसके अपौरुषेय होने में सन्देह होने लगता है। हिन्दुओं में भी एक सम्प्रदाय पशु-बलि को अपना धर्म समझता है। यहूदियों, ईसाइयों और अन्य मतों ने भी कुरबानी की बड़ी महिमा गायी है। इसी तरह एक समय नर-बलि का भी रिवाज था। आज भी कहीं-कहीं उस सम्प्रदाय के नामलेवा मौजूद हैं, मगर क्या सरकार ने नर-बलि को अपराध नहीं ठहराया और ऐसे मजहबी दीवानों को फाँसी नहीं दी ? अपने स्वाद के लिए आप भेड़ को जबह कीजिएगा, या गाय, ऊँट या घोड़े को ? मुझे कोई आपत्ति नहीं। लेकिन धर्म के नाम पर कुरबानी मेरी समझ में नहीं आती। अगर आज इन जानवरों का राज हो जाय, तो कहिए, वे इन कुरबानियों के जवाब में हमें और आपको कुरबान कर दें या नहीं ?

मगर हम जानते हैं, जानवरों में कभी यह शक्ति न आयेगी, इसलिए हम बेधड़क कुरबानियाँ करते हैं और समझते हैं, हम बड़े धर्मात्मा हैं। स्वार्थ और लोभ के लिए हम चौबीसों घंटे अधर्म करते हैं। कोई गम नहीं, लेकिन कुरबानी का पुन लूटे बगैर हमसे नहीं रहा जाता। तो जनाब, मैं ऐसे रक्तशोषक धर्मों का भक्त नहीं। यहाँ तो मानवता के पुजारी हैं, चाहे इस्लाम में हो या हिन्दू-धर्म में या बौद्ध में या ईसाइयत में; अन्यथा मैं विधार्मी ही भला। मुझे किसी मनुष्य से केवल इसलिए द्वेष तो नहीं है कि यह मेरा सहधार्मी नहीं। मैं किसी का खून तो नहीं बहाता, इसलिए कि मुझे पुन होगा। इस तरह के कितने ही परिवर्तन महाशयजी के विचारों में आ गये।

और महाशयजी के पास सम्भाषण का केवल एक ही विषय है, जिससे वह कभी नहीं थकते और वह है उस स्वर्गवासिनी का गुणगान। कोई मेहमान आ जाय, आप बावले-से इधर-उधर दौड़ रहे हैं, कुछ नहीं सूझता, कैसे उसकी खातिर करें। क्षमा-याचना के लिए शब्द ढूँढ़ते फिरते हैं –भाईजान, मैं आपकी क्या खातिर करूँ, जो आपकी सच्ची खातिर करता, वह नहीं रहा। इस वक्त तक आपके सामने चाय और टोस्ट और बादाम का हलवा आ जाता। सन्तरे और सेब छिले-छिलाये तश्तरियों में रख दिये जाते। मैं तो निरा उल्लू हूँ, भाईसाहब, बिलकुल काठ का उल्लू। मुझमें जो कुछ अच्छा था, वह सब उनका प्रसाद था। उसी की बुद्धि से मैं बुद्धिमान् था, उसी की सज्जनता से सज्जन, उसी की उदारता से उदार। अब तो निरा मिट्टी का पुतला हूँ भाई साहब, बिलकुल मुर्दा। मैं उस देवी के योग्य न था। न-जाने किन शुभ-कर्मों के फल से वह मुझे मिली थी। आइए, आपको उसकी तसवीर दिखाऊँ। मालूम होता है, अभी-अभी उठकर चली गयी है। भाई साहब, आपसे साफ कहता हूँ, मैंने ऐसी सुन्दरी कभी नहीं देखी। उसके रूप में केवल रूप की गरिमा ही न थी, रूप का माधुर्य भी था और मादकता भी, एक-एक अंग सहचे में ढला था। साहब ! आप उसे देखकर कवियों के नख-सिख को लात मारते।

आप उत्सुक नेत्रों से वह तसवीर देखते हैं। आपको उसमें कोई विशेष सौन्दर्य नहीं मिलता। स्थूल शरीर है, चौड़ा-सा मुँह, छोटी-छोटी आँखें, रंग-ढंग से दहकानीपन झलक रहा है। उस तसवीर की खूबियाँ कुछ इस अनुराग और इस आडम्बर से बयान किये जाते हैं कि आपको सचमुच इस चित्र में सौन्दर्य का आभास होने लगता है। इस गुणानुवाद में कितना समय जाता है, वही महाशयजी के जीवन के आनन्द की घड़ियाँ हैं। इतनी ही देर वह जीवित रहते हैं। शेष जीवन निरानन्द है, निस्पन्द है। पहले कुछ दिनों तक तो वह हमारे साथ हवा खाने जाते रहे वह क्या जाते रहे, मैं जबरदस्ती टेल-ठालकर ले जाता रहा, लेकिन रोज आधे घण्टे तक उनका इत्तजार करना पड़ता था। किसी तरह घर से निकलते भी तो जनवासे वाली

चाल से चलते और आधा मील में ही हिम्मत हार जाते और लौट चलने का तकाजा करने लगते। आखिर मैंने उन्हें साथ ले जाना छोड़ दिया। और तबसे उनकी चहलकदमी चालीस कदम की रह गयी है। सैर क्या है बेगार है और वह भी इसलिए कि देवीजी के सामने उनका यह नियम था।

एक दिन उनके द्वार के सामने से निकला, तो देखा कि ऊपर की खिड़कियाँ, जो बरसों से बन्द पड़ी थीं, खुली हुई हैं ! अचरज हुआ। द्वार पर नौकर बैठा नारियल पी रहा था। उससे पूछा,, तो मालूम हुआ, आप घूमने गये हैं। मुझे मीठा विस्मय हुआ। आज यह नई बात क्यों ! इतने सबेरे तो यह कभी नहीं उठते। जिस तरफ वह गये थे, उधर ही मैंने भी कदम बढ़ाये। इधर एक हफ्ते के लिए मैं एक नेवते में चला गया था। इस बीच यह क्या कायापलट हो गयी ! जरूर कोई-न-कोई रहस्य है। और भला आदमी निकल कितनी दूर गया ? दो मील तक कहीं पता नहीं ! मैं निराश हो गया, मगर यह महाशय रास्ते में कहाँ रह गये, यहाँ तो किसी से



उनकी मुलाकात भी नहीं है, जहाँ ठहर गये हों ? कुछ चिन्ता भी हो रही थी। कहीं कुएं में तो नहीं कूद पड़े ! मैं लौटने ही वाला था कि आप लौटते हुए नजर आये। चित्त शान्त हुआ। आज तो कैड़ा ही और था। बाल नये फैशन से कटे हुए, मूँछें साफ, दाढ़ी चिकनी, चेहरा खिला हुआ, चाल में चपलता, सूट पुराना, पर ब्रश किया हुआ और शायद इस्तरी भी की हुई, बूट पर ताजा पालिश। मुस्कराते चले आते थे। मुझे देखते ही लपककर हाथ मिलाया और बोले –आज कई दिन के बाद मिले ! कहीं गये थे क्या ?

मैंने अपनी गैरहाजिरी का कारण बताकर कहा, –मैं डरता हूँ, आज तुम्हें नजर न लग जाय। अब मैं नित्य तुम्हारे साथ घूमने आया करूँगा। आज बहुत दिनों के बाद तुमने आदमी का चोला धारण किया है।

झेंपकर बोले –नहीं भई, मुझे अकेला ही रहने दो ! तुम लगोगे दौड़ने और ऊपर से घुड़कियाँ जमाओगे। मैं अपने हौले-हौले चला जाता हूँ। जब थक जाता हूँ, कहीं बैठ लेता हूँ। मेरा-तुम्हारा क्या साथ ?

–यह दशा तो तुम्हारी एक सप्ताह पहले न थी। आज तो तुम बिलकुल अप-टु-डेट हो। इस चाल से तो शायद मैं तुमसे पीछे ही रहूँगा।

‘तुम तो बनाने लगे।’

‘मैं कल से तुम्हारे साथ घूमने आऊँगा। मेरा इन्तजार करना।’

‘नहीं भई, मुझे दिक न करो। मैं आजकल बहुत सबेरे उठ जाता हूँ। रात को नींद नहीं आती। सोचता हूँ, टहल ही आऊँ। तुम मेरे साथ क्यों परेशान होगे ?’

मेरा विस्मय बढ़ता जा रहा था। यह महाशय हमेशा मेरे पैरों पड़ते रहते थे कि मुझे भी साथ ले लिया करो। जब मैंने इनकी मन्थरता से हारकर इनका साथ छोड़ दिया, तब इन्हें बड़ा दुःख हुआ। दो-एक बार मुझसे शिकायत भी की –हाँ भई, अब क्यों साथ दोगे ? अभागों का साथ किसने दिया है, या तुम कोई नयी रीति निकालोगे ? जमाने का दस्तूर है, जो लँगड़ाता हो उसे ढकेल दो, जो बीमार हो, उसे जहर दे दो- और वही आदमी आज मुझसे पीछा छुड़ा रहा है ? यह क्या रहस्य है ? यह चपलता, प्रसन्नता और सजीवता कहाँ से आ गयी ? कहीं आपने बन्दर की गिल्टी तो नहीं लगवा ली ! यह नया सिविल सर्जन गिल्टी-आरोपण-कला में सिद्धहस्त

है। मुमकिन है, तुम्हें किसी ने सुझा दिया हो और आपने हजार-पाँच सौ खर्च करके गिल्टी बदलवा ली हो। इस पहेली को बूझे बगैर चैन कहाँ। उनके साथ ही लौट पड़ा।

दो-चार कदम चलकर मैंने पूछा, ‘सच बताओ, भाईजान ! गिल्टी-विल्टी तो नहीं लगवा ली ?’

उन्होंने प्रश्न की आँखों से देखा , ‘कैसी गिल्टी ? मैं नहीं समझा।’

‘मुझे सन्देह हो रहा है कि तुमने बन्दर की गिल्टियाँ लगवा ली हैं।’

‘अरे यार, क्यों कोसते हो ? गिल्टियाँ किसलिए लगवाता ? मुझे तो इसका कभी खयाल भी नहीं आया।’

‘तो क्या कोई बिजली का यन्त्र मँगवा लिया है ?’

‘तुम आज मेरे पीछे क्यों हाथ धोकर पड़े हो ? विधवा भी तो कभी सिंगार कर लेती है ? जी ही तो है ! एक दिन मुझे अपने आलस्य और बेदिली पर खेद हुआ। मैंने सोचा, जब संसार में रहना है, तो जिंदों की तरह क्यों न रहूँ। मुर्दों की तरह जीने से क्या फायदा। बस और न कोई बात है, न रहस्य।’

मुझे इस व्याख्या से सन्तोष न हुआ। दूसरे

दिन जरा और सबेरे आकर मुंशीजी के द्वार पर आवाज दी; लेकिन आप आज भी निकल चुके थे। मैं उनके पीछे भागा। जिद पड़ गयी कि इसे अकेले न जाने दूँगा। देखूँ, कब तक मुझसे भागता है। कोई रहस्य है अवश्य। अच्छा बचा, आधी रात को आकर बिस्तर से न उठाऊँ तो सही। दौड़ तो न सका; लेकिन जितना तेज चल सकता था, चला। एक मील के बाद आप नजर आये। बगटुट भागे चले जा रहे थे। अब मैं बार-बार पुकार रहा हूँ – ‘हजरत, जरा ठहर जाइए, मेरी सॉस फूल रही है; मगर आप हैं कि सुनते ही नहीं। आखिर जब मैंने अपने सिर की कसम दिलायी, तब जाकर आप रुके। मैं झपाटे से पहुँचा, तो तिनककर बोले ’ मैंने तुमसे कह दिया था, मेरे घर मत आना, फिर क्यों आये और क्यों मेरे पीछे पड़े ? मुझे आप धीरे-धीरे घूमने दो। तुम अपना रास्ता लो।’

मैंने उनका हाथ पकड़कर जोर से झटका दिया और बोला, ‘देखो,होरीलाल, मुझसे उड़ो नहीं, वरना मुझे जानते हो, कितना बेमुर्ौवत आदमी हूँ। तुम यह धीरे-धीरे टहल रहे हो

उन्हें छेड़-छेड़कर और भी उत्तेजित कर रहा था कि एकाएक उन्होंने उँगली मुँह पर रखकर मुझे चुप रहने का इशारा किया। और जरा कद और सीधा करके और चेहरे पर प्रसन्नता और पुरुषार्थ का रंग भर मस्तानी चाल से चलने लगे। मेरी समझ में जरा भी न आया, यह संकेत और बहुरूप किसलिए ? वहाँ तो दूसरा कोई था भी नहीं। हाँ, सामने से एक स्त्री चली आ रही थी; मगर उसके सामने इस पर्देदार की क्या जरूरत ? मैंने तो उसे कभी देखा भी न था। आसमानी रंग की रेशमी साड़ी, जिस पर पीला लैस टँका था, उस पर खूब खिल रही थी। रूपवती कदापि न थी, मगर रूप से ज्यादा मोहक थी उसकी सरलता और प्रसन्नता। एक बहुत ही मामूली शक्ल-सूरत की औरत इतनी नयनाभिराम हो सकती है, यह मैं न समझ सकता था।

उसने होरीलाल के बराबर आकर नमस्कार किया। होरीलाल ने जवाब में सिर तो झुका दिया; मगर बिना कुछ बोले आगे बढ़ना चाहते थे कि उसने कोयल के स्वर में कहा, %क्या अब लौटिएगा नहीं ? आप अपनी सीमा से आगे बढ़े जा रहे हैं। और हाँ, आज तो आपने मुझे देवीजी की तसवीर देने का वादा किया था। शायद भूल गये, आपके साथ चलूँ ?’

महाशयजी कुछ ऐसे बौखलाये हुए थे, कि मामूली शिष्टाचार भी न कर सके। यों वह बड़े ही भद्र पुरुष हैं और शिष्टाचार में निपुण; लेकिन इस वक्त जैसे उनके हाथ-पाँव फूले हुए थे। एक कदम और आगे बढ़कर बोले ‘आप क्षमा कीजिए। मैं एक काम से जा रहा हूँ।’

महिला ने कुछ चिढ़ाकर कहा, ‘आप तो जैसे भागे जा रहे हैं। मुझे तसवीर दीजिएगा या नहीं ?’ महाशयजी ने मेरी ओर कुपित नेत्रों से देखकर कहा, ‘तलाश करूँगा।’

सुन्दरी ने शिकायत के स्वर में कहा, ‘आपने तो फरमाया था कि वह हमेशा आपकी मेज पर रहती है। और अब आप कहते हैं तलाश करूँगा। आपकी तबीयत तो अच्छी है ? जब से आपने उनका चरित्र सुनाया है, मैं

उनके दर्शनों के लिए व्याकुल हो रही हूँ। अगर आप यों न देंगे, मैं आपकी मेज पर से उठा लाऊँगी। (मेरी ओर देखकर) आप मेरी मदद कीजिएगा महाशय। यद्यपि मैं जानती हूँ, आप इनके मित्र हैं और इनके साथ दगा न करेंगे। आपको ताज्जुब हो रहा होगा, यह कौन औरत महाशयजी से इतनी निस्संकोच होकर बातें कर रही है। इनसे पहली बार मेरा परिचय सब्जीमंडी में हुआ था। मैं शाक-भाजी खरीदने गयी हुई थी। अपनी भाजी मैं खुद लाती हूँ, जिस चीज पर जीवन का आधार है, उसे नौकरों के हाथ नहीं छोड़ना चाहती। भाजी लेकर मैंने दाम देने के लिए रुपया निकाला, तो कुँजड़े ने उसे टंकारकर कहा, दूसरा रुपया दो, यह खोटा है। अब मैंने जो खुद टंकारा, तो मालूम हुआ, सचमुच कुछ ठस है। अब क्या करूँ ! मेरे पास दूसरा रुपया न था, यद्यपि इस तरह के कटु अनुभव मुझे कितनी बार हो चुके हैं; मगर घर से रुपया लेकर चलते वक्त मुझे उसे परख लेने की याद नहीं रहती। न किसी से लेती ही बार परखती हूँ। इस वक्त मेरे संदूक में ज्यादा नहीं तो बीस-पचीस खोटे रुपये पड़े होंगे, और रेजगारियाँ तो सैकड़ों की ही होंगी। मेरे लिए अब इसके सिवा दूसरा उपाय न था कि भाजी लौटाकर खाली हाथ चली आऊँ। संयोग से महाशयजी उसी दूकान पर भाजी लेने आये थे। मुझे इस विपत्ति में देखकर आपने तुरन्त एक रुपया निकालकर दे दिया ... ।’

महाशयजी ने बात काटकर कहा, ‘तो इस

शेष पृष्ठ १० पर....

वह इसी तरह मुझे कोसते जा रहे थे और मैं



वक्त आप वह सारी कथा क्यों सुना रही हैं ? हम दोनों एक जरूरी काम से जा रहे हैं। व्यर्थ में देर हो रही है।' उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचा।

मुझे उनकी यह अभद्रता बुरी लगी। कुछ-कुछ इसका रहस्य भी समझ में आ गया। बोला, 'तो आप जाइए; मुझे ऐसा कोई जरूरी काम नहीं है, मैं भी अब लौटना चाहता हूँ।'।

महाशयजी ने दाँत पीस लिए, अगर वह सुन्दरी वहाँ न होती, तो न-जाने मेरी क्या दुर्दशा करते। एक क्षण मेरी ओर अग्नि-भरे नेत्रों से ताकते रहे, मानो कह रहे हों अच्छा, इसका मजा न चखाया, तो कहना और चल दिये।

मैं देवी के साथ लौटा। सहसा उसने हिचकिचाते हुए कहा, %मगर नहीं, आप जाइए, मैं उनके साथ जाऊँगी। शायद मुझसे नाराज हो गये हैं। आज एक सप्ताह से मेरा और उनका रोज साथ हो जाता है और अब अपनी जीवन-कथा सुनाया करते हैं। कैसी नसीबवाली थी, वह औरत, जिसका पति आज भी उसके नाम की पूजा करता है। आपने तो उन्हें देखा होगा। क्या सचमुच इन पर जान देती थी ?

मैंने गर्व से कहा, -दोनों में इश्क था।

‘और जब से उनका देहान्त हुआ, यह दुनिया से मुँह मोड़ बैठे ?’

‘इससे भी अधिक ! उसकी स्मृति के सिवा जीवन में उनके लिए कोई रस ही न रहा।’

‘वह रूपवती थी ?’

‘इनकी दृष्टि में तो उससे बढ़कर रूपवती संसार में न थी।’

उसने एक मिनट तक किसी विचार में मग्न रहकर कहा, ‘अच्छा आप जायँ। मैं उनके साथ बात करूँगी। ऐसे देवता पुरुष की मुझसे जो सेवा हो सकती है, उसमें क्यों देर करूँ ? मैं तो इनका वृत्तान्त सुनकर सम्मोहित हो गयी हूँ।’

मैं अपना-सा मुँह लेकर घर चला आया। इत्फाक से उसी दिन मुझे एक जरूरी काम से दिल्ली जाना पड़ा। वहाँ से एक महीने में लौटा। और सबसे पहला काम जो मैंने किया, वह महाशय होरीलाल का क्षेम-कुशल पूछना था। इस बीच में क्या-क्या नयी बातें हो गयीं यह जानने के लिए अधीर हो रहा था। दिल्ली से इन्हें एक पत्र लिखा था; पर इन हजरत में यह बुरी आदत है कि पत्रों का जवाब नहीं देते। सुन्दरी से इनका अब क्या संबंध है, आमदरफ्त जारी है, या बन्द हो गयी, उसने इनके पत्नी-व्रत का क्या पुरस्कार दिया, या देनेवाली है ? इस तरह के प्रश्न दिल में उबल रहे थे। मैं महाशयजी के घर पहुँचा, तो आठ बज रहे थे। खिड़कियों के पट बन्द थे। सामने बरामदे में कूड़े-करकट का ढेर था। ठीक वही दशा थी, जो पहले नजर आती थी। चिन्ता और बढ़ी। ऊपर गया तो देखा, आप उसी फर्श पर पड़े हुए जहाँ दुनिया-भर की चीजें बेढंगेपन से अस्त-व्यस्त पड़ी हुई हैं एक पत्रिका के पन्ने उलट रहे हैं। शायद एक सप्ताह से बाल नहीं बने थे। चेहरे पर जर्दी छायी थी।

मैंने पूछा, आप सैर करके लौट आये क्या ? सितपिटाकर बोले अजी, ‘सैर-सपाटे की कहाँ फुर्सत है भई, और फुर्सत भी हो, तो वह दिल कहाँ है ! तुम तो कहीं बाहर गये थे ?’

‘हाँ, जरा देहली तक गया था। अब सुन्दरी से आपकी मुलाकात नहीं होती ?’ ‘इधर तो बहुत दिनों से नहीं हुई।’

‘कहीं चली गयी क्या ?’

‘मुझे क्या खबर !’

‘मगर आप तो उस पर बेतरह रीझे हुए थे।’

‘मैं उस पर रीझा था ! आप सनक तो नहीं गये हैं ! जिस पर रीझा था, जब उसी ने साथ न दिया, तो अब दूसरों पर क्या रीझूँगा ?’

मैंने बैठकर उसकी गर्दन में हाथ डाल दिया और धमकाकर बोला, ‘देखो होरीलाल, मुझे चकमा न दो। पहले मैं तुम्हें जरूर व्रतधारी समझता था, लेकिन तुम्हारी वह रसिकता देखकर, जिसका दौरा तुम्हारे ऊपर एक महीना पहले हुआ था, मैं यह नहीं मान सकता कि तुमने अपनी अभिलाषाओं को सदा के लिए दफन कर दिया है। इस बीच में जो कुछ हुआ है, उसका पूरा-पूरा वृत्तान्त मुझे सुनाना पड़ेगा। वरना समझ लो, मेरी और तुम्हारी दोस्ती का अन्त है।’

होरीलाल की आँखें सजल हो गयीं। हिचक-हिचककर बोले, ‘मेरे साथ इतना बड़ा अन्याय मत करो, भाईजान ! अगर तुम्हीं मुझपर ऐसे



सन्देह करने लगोगे, तो मैं कहीं का न रहूँगा। उस स्त्री का नाम मिस इंदिरा है। यहाँ जो लड़कियों का हाईस्कूल है, उसी की हेड मिस्ट्रेस होकर आयी है। मेरा उससे कैसे परिचय हुआ, यह तो तुम्हें मालूम ही है। उसकी सहृदयता ने मुझे उसका प्रेमी बना दिया। इस उम्र में और शोक का यह भार सिर पर रखे हुए, सहृदयता के सिवा मुझे उसकी ओर कौन-सी चीज खींच सकती थी ? मैं केवल अपनी मनोव्यथा की कहानी सुनाने के लिए विरहियों की उमंग के साथ उसके पास जाता था। वह रूपवती है, खुशमिजाज है, दूसरों का दुःख समझती है और स्वभाव की बहुत कोमल है, लेकिन तुम्हारी भाभी से उसकी क्या तुलना ! वह तो स्वर्ग की देवी थी। उसने मुझ पर जो रंग जमा दिया, उस पर अब दूसरा रंग क्या जमेगा। मैं उसी ज्योति से जीवित था। उस ज्योति के साथ मेरा जीवन भी विदा हो गया। अब तो मैं उसी प्रतिमा का उपासक हूँ, जो मेरे हृदय में है। किसी हमदर्द की सूरत देखता हूँ, तो निहाल हो जाता हूँ और अपनी दुःख-कथा सुनाने दौड़ता हूँ। यह मेरी दुर्बलता है, यह जानता हूँ, मेरे सभी मित्र इसी कारण मुझसे भागते हैं, यह भी जानता हूँ। लेकिन क्या करूँ भैया, किसी-न-किसी को दिल की लगी सुनाये बगैर मुझसे नहीं रहा जाता। ऐसा मालूम होता है, मेरा दम घुट जायगा। इसलिए जब मिस इंदिरा की मुझ पर दया-दृष्टि हुई; तो मैंने इसे दैवी अनुरोध समझा और उस धुन में जो मेरे मित्रवर्ग दुर्भाग्यवश उन्माद समझते हैं वह सब-कुछ कह गया, जो मेरे मन में था और है एवं मरते दम तक रहेगा। उन शुभ दिनों की याद कैसे भुला दूँ?

मेरे लिए तो वह अतीत वर्तमान से भी ज्यादा सजीव और प्रत्यक्ष है। मैं तो अब भी उसी अतीत में रहता हूँ। मिस इंदिरा को मुझ पर

दया आ गयी, एक दिन उन्होंने मेरी दावत की और कई स्वादिष्ट खाने अपने हाथ से बनाकर खिलाये। दूसरे दिन मेरे घर आर्थी और यहाँ की सारी चीजों को व्यवस्थित रूप में सजा गयीं। तीसरे दिन कुछ कपड़े लार्थी और मेरे लिए खुद एक सूट तैयार किया ! इस कला में बड़ी चतुर हैं। एक दिन शाम को क्रीस पार्क में मुझसे बोलीं ‘आप अपनी शादी क्यों नहीं कर लेते?’

मैंने हँसकर कहा, ‘इस उम्र में अब क्या शादी करूँगा, इंदिरा ! दुनिया क्या कहेगी !’

मिस इंदिरा बोलीं, ‘आपकी उम्र अभी ऐसी क्या है। आप चालीस से ज्यादा नहीं मालूम होते।’ मैंने उनकी भूल सुधरी मेरा पचासवाँ साल है। उन्होंने मुझे प्रोत्साहन देकर कहा, उम्र का हिसाब साल से नहीं होता, महाशय, सेहत से होता है। आपकी सेहत बहुत अच्छी है। कोई आपको पान की तरह फेरनेवाला चाहिए। किसी युवती के प्रेम-पाश में फँस जाइए। फिर देखिए, यह नीरसता कहाँ गायब हो जाती है। मेरा दिल धड़-धड़ करने लगा। मैंने देखा मिस इंदिरा के गोरे मुख-मंडल पर हलकी-सी लाली दौड़ गयी है। उनकी आँखें

शर्म से झुक गयी हैं और कोई बात बार-बार उनके ओंठों तक आकर लौट जाती है। आखिर उन्होंने आँख उठायी और मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर बोलीं अगर आप समझते हों कि मैं आपकी कुछ सेवा कर सकती हूँ तो मैं हर तरह हाजिर हूँ, मुझे आपसे जो भक्ति और प्रेम है, वह इसी रूप में चरितार्थ हो सकता है। मैंने धीरे से अपना हाथ छुड़ा लिया और काँपते हुए स्वर में बोला, ‘मैं तुम्हारी इस कृपा का कहाँ तक धन्यवाद दूँ, मिस इंदिरा; मगर मुझे खेद है कि मैं सजीव मनुष्य नहीं, केवल मधुर समृतियों का पुतला हूँ। मैं उस देवी की स्मृति को अपनी लिप्सा और तुम्हारी सहानुभूति को अपनी आसक्ति से भ्रष्ट नहीं करना चाहता।’

मैंने इसके बाद बहुत-सी चिकनी-चुपड़ी बातें कहीं, लेकिन वह जब तक यहाँ रहीं, मुँह से कुछ न बोलीं। जाते समय भी उनकी भँवें तनी हुई थीं। मैंने अपने आँसुओं से उनकी ज्वाला को शांत करना चाहा; लेकिन कुछ असर न हुआ। तब से वह नजर नहीं आयीं। न मुझे हिम्मत पड़ी कि उनको तलाश करता, हालाँकि चलती बार उन्होंने मुझसे कहा था, जब आपको कोई कष्ट हो और आप मेरी जरूरत समझें तो मुझे बुला लीजिएगा।

होरीलाल ने अपनी कथा समाप्त करके मेरी ओर ऐसी आँखों से देखा जो चाहती थी कि मैं उनके व्रत और संतोष की प्रशंसा करूँ; मगर मैंने उनकी भर्त्सना की ‘कितने बदनसीब हो तुम होरीलाल, मुझे तुम्हारे ऊपर दया भी आती है और क्रोध भी ! अभाग, तेरी जिन्दगी सँवर जाती। वह स्त्री नहीं थी ईश्वर की भेजी कोई देवी थी, जो तेरे अँधेरे जीवन को अपनी मधुर ज्योति से आलोकित करने के लिए आयी थी, तूने स्वर्ण का-सा अवसर हाथ से खो दिया।’

होरीलाल ने दीवार पर लटके हुए अपनी पत्नी के चित्र की ओर देखा और प्रेम-पुलकित स्वर में बोले, ‘मैं तो उसी का आशिक हूँ भाईजान, और उसी का आशिक रहूँगा।’

## निंदा



निंदा की कला तुम ध्यान रखना, निंदा का एक मनोविज्ञान है। क्यों लोग निंदा पसंद करते हैं ? तुम अगर किसी से कहो कि अ नाम का आदमी संत हो गया है, कोई मानेगा नहीं। पच्चीस दलीलें लोग लाएंगे कि नहीं, संत नहीं है। सब धोखा घडी है। सब पाखंड है। और तुम किसी के संबंध में कहो कि फला आदमी चोर हो गया है; तो कोई विवाद न करेगा। वह कहेगा. हमें पहले से ही पता है। वह चोर है ही। क्या हमें बता रहे हो ! वह महाचोर है। तुम्हें अब पता चला ! तुम्हारी आँखें अंधी थीं। तुमने कभी देखा -निंदा जब तुम किसी की करो, तो कोई प्रमाण नहीं मांगता। और प्रशंसा जब करो, तो हजार प्रमाण मांगे जाते हैं। और, और भी एक कठिनाई है कि प्रशंसा जिन चीजों की होती है, उनके लिए प्रमाण नहीं होते। और निंदा जिन चीजों की होती है, उनके लिए प्रमाण होते हैं। क्योंकि निंदा तो क्षुद्र जगत की बात है, उसके लिए प्रमाण हो सकते हैं। समझो किसी आदमी की तुम निंदा कर रहे हो कि उसने चोरी की। तो चार आदमी गवाह की तरह खड़े किए जा सकते हैं कि इन्होंने उसे चोरी करते देखा। लेकिन तुम कहते हो कि कोई आदमी जाग गया, प्रबुद्ध हो गया, इसके लिए कहां गवाह खोजोगे ! कहां से गवाह मौजूद करोगे ? कौन कहेगा कि हाँ, मैंने इसको बुद्ध होते देखा ! यह बात तो देखने की नहीं है। यह तो बुद्ध ही कोई हो, तो देख सके, जो स्वयं बुद्ध हो, वह देख सके। दूसरा तो कोई इसका गवाह नहीं हो सकता। मजे की बात देखना। जो प्रशंसा योग्य तत्व हैं, उनके लिए प्रमाण नहीं होते। और उनके लिए लोग प्रमाण पूछते हैं। और जो निंदा है, उसके लिए हजार प्रमाण होते हैं, लेकिन कोई प्रमाण पूछता ही नहीं। प्रमाण के बिना ही स्वीकार कर लेते हैं लोग। लोग निंदा स्वीकार करना चाहते हैं। लोग तैयार ही हैं कि निंदा करो। तुम्हारे अखबार निंदा से भरे होते हैं। तुम अखबार पढ़ते ही इसीलिए हो कि आज किस किस की बखिया उधेड़ी गयी। अखबार में जिस दिन निंदा नहीं होती, उस दिन तुम उसे उदासी से सरकाकर एक तरफ रख देते हो कि कुछ खास बात ही नहीं है। जब अखबार में हत्या की खबर होती है, चोरी की, किसी की स्त्री के भगाने की, तलाक की, आत्महत्या की, तब तुम एकदम चश्मा ठीक करके एकदम अखबार पर झुक जाते हो कि एक शब्द चूक न जाए ! इसलिए बेचारा अखबार छापने वाला आदमी निंदा की तलाश में घूमता रहता है। पत्रकारों की दृष्टि ही मिथ्या हो जाती है, क्योंकि उनका धंधा ही खराब है। उनके धंधे का मतलब ही यह है कि जनता जो चाहती है, वह लाओ खोजबीन कर। अच्छे से अच्छे आदमी में कुछ बुरा खोजो। सुंदर से सुंदर में कोई दाग खोजो। चांद की फिकर छोड़ो। चांद पर वह जो काला धब्बा है, उसकी चर्चा करो। क्योंकि लोग धब्बे में उत्सुक हैं, चांद में उत्सुक नहीं हैं। चांद की बात करो, तो कोई अखबार खरीदेगा ही नहीं। इसलिए जो पत्रकारिता है, वह मूलतः निंदा के रस की ही कला है। कैसे खोज लो कहीं से भी कुछ गलत कैसे खोज लो ! और जब तुम खोजने का तय ही किए बैठे हो, तो जरूर खोज लोगे। क्योंकि जो आदमी जो खोजने निकला है, उसे मिल जाएगी। यह दुनिया विराट है। इसमें अंधेरी रातें हैं और उजाले दिन हैं। इसमें गुलाब के फूल हैं और गुलाब के काटे हैं। जो आदमी निंदा खोजने निकला है, वह कहेगा कि दुनिया बड़ी बुरी है। यहां दो रातों के बीच में एक छोटा सा दिन है। दो अंधेरी रातें, और बीच में छोटा सा दिन ! और जो प्रशंसा खोजने निकला है, वह कहेगा कि दुनिया बड़ी प्यारी है। परमात्मा ने कैसी गजब की दुनिया बनायी है. दो उजाले दिन, बीच में एक अंधेरी रात ! जो आदमी निंदा खोजने निकला है, वह गुलाब की झाड़ी में काटो की गिनती कर लेगा। और स्वभावतः काटो की गिनती जब तुम करोगे, तो कोई न कोई काटा हाथ में गड़ जाएगा। तुम और क्रोधाग्नि से भर जाओगे। अगर कांटा हाथ में गड़ गया और खून निकल आया, तो तुम्हें जो एकाध फूल खिला है झाड़ी पर, वह दिखायी ही नहीं पड़ेगा। तुम अपनी पीड़ा से दब जाओगे। तुम गालिया देते हुए लौटोगे। जो आदमी फूल को देखने निकला है, वह फूल से ऐसा भर जाएगा कि उसे काटे भी प्यारे मालूम पड़ेंगे। वह फूल से ऐसा रसविमुग्ध हो जाएगा कि उसे यह बात दिखायी पड़ेगी कि काटे जरूर भगवान ने इसीलिए बनाए होंगे कि फूलों की रक्षा हो सके। ये फूलों के पहरेदार हैं। सब तुम पर निर्भर है, कैसे तुम देखते हो, क्या तुम देखने चले हो। ?



सिनेमा

## समावेशी सिनेमा के साथ महिलाओं को लेकर बदला बॉलीवुड का नजरिया

कई फिल्मों में गुस्सैल और सज्जत मिजाज तो कई फिल्मों में सौख्य और मजाकिया अंदाज में नजर आ रही महिलाओं ने विभिन्न भूमिकाओं के साथ हिंदी सिनेमा जगत में खुद को अलग पहचान के साथ स्थापित कर लिया है।



कई फिल्मों में गुस्सैल और सज्जत मिजाज तो कई फिल्मों में सौख्य और मजाकिया अंदाज में नजर आ रही महिलाओं ने विभिन्न भूमिकाओं के साथ हिंदी सिनेमा जगत में खुद को अलग पहचान के साथ स्थापित कर लिया है। महिलाओं को एक ही तरह की भूमिका में ढालने का चलन अब बंद हो गया है और यह सब मुमकिन हो पाया है महिला लेखकों, फिल्मकारों और उन दर्शकों की वजह से जो ऐसे किरदारों को देखने के लिए पैसा खर्च कर रहे हैं और उन्हें सुन रहे हैं।

सई परांजपे और कल्पना लाजमी जैसी लेखिकाओं-फिल्मकारों ने 80 के दशक में 'स्पर्श' और 'एक पल' जैसी फिल्मों के साथ उस वक्त के सिनेमा में पुरुष प्रधान भूमिकाओं के चलन को तोड़ा तो आज की लेखिकाएं और फिल्मकार इस माध्यम का इस्तेमाल अपनी राय एवं महत्त्वकांक्षाओं को सामने रखने के साथ ही आज के समाज को दर्शाने के लिए कर रही हैं। इस साल के शुरुआती दो महीनों में फिल्मकार मेघना गुलजार - अतिका चौहान की फिल्म 'छपाक', अश्विनी अय्यर तिवारी और निखिल मेहरोत्रा की 'पंगा' और निर्देशक अनुभव सिन्हा और मृण्मयी लागू वायकुल की 'थप्पड़' रिलीज हुई। ये सभी बॉलीवुड की मुख्यधारा की फिल्में थीं जिनमें महिला लेखक टीम की हिस्सा थीं।

दीपिका पादुकोण अभिनीत 'छपाक' तेजाब हमले के विषय पर बनी थी, वहीं कंगना रनौत अभिनीत 'पंगा' शादी और मां बनने के बाद एक महिला के काम पर लौटने पर आधारित थी। फिल्म 'थप्पड़' घरेलू हिंसा और सभी तरह की परिस्थितियों में सम्मान के लिए एक गृहिणी के संघर्ष को दिखाती

है। हिंदी फिल्म उद्योग की महिला लेखकों का मानना है कि समावेशी, संवेदनशील और लैंगिक भेदभाव रहित कहानियों को दिखाने

का यह सही वक्त है। मृण्मयी को उम्मीद है कि 'थप्पड़' की सफलता उन कहानियों को बताना आसान बनाती है जो उनकी दुनिया से

जुड़ी हुई हैं। पटकथा लेखिका कनिका ढिल्लन जिन्होंने 'मनमर्जियां' और 'जजमेंटल है क्या' जैसी

फिल्मों में महिलाओं के लिए जुदा पात्र लिखे हैं, का कहना है कि महिलाएं 'उनकी बात और नहीं सुने जाने' के लिए अब तैयार नहीं हैं। फातिमा बेगम, जद्दन बाई और देविका रानी जैसी अदाकाराओं के साथ 1930 के दशक का शुरुआती वक्त महिलाओं के दबदबे वाला बॉलीवुड 1950 के दशक तक आते-आते पुरुषों के वर्चस्व वाला बन गया जहां हिंदी फिल्म की अभिनेत्रियां संकट में फंसी युवतियों की भूमिका निभाने तक सीमित थीं। इसके चलते कैमरा के पीछे भी महिलाओं के लिए अवसरों की कमी हो गई।

1970 के दशक में समानांतर सिनेमा आंदोलन ने महिलाओं की पर्दे पर वापसी का संकेत दिया और धीरे-धीरे महिला प्रतिभाओं का फिल्म निर्माण के तकनीकी क्षेत्र में योगदान बढ़ा। इस युग में कोरियोग्राफी, कला निर्देशन एवं लेखन क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका बढ़ी लेकिन फिल्म निर्देशन अब भी मुख्यतः पुरुषों का ही क्षेत्र माना जाता था। 2000 का दशक आते-आते यह स्थिति बदलने लगी जहां मेघना, तनुजा चंद्रा, देविका भगत, भवानी अय्यर और जूही चतुर्वेदी जैसे फिल्मकार और लेखक वास्तविक और तह तक जाने वाली कहानियों को सामने लाने लगीं। फिल्में भले ही कम थीं लेकिन उनका प्रभाव बढ़ा था क्योंकि इन महिला लेखकों के काम ने कई और को आगे आने की प्रेरणा दी 'विकी डोनर', 'पीकू' और 'अक्टूबर' जैसी फिल्मों की लेखिका जूही ने कहा कि वह जेंडर के चश्मे से अपनी कहानियों को वर्गीकृत करना पसंद नहीं करती हैं। उनका कहना है कि मेरे दिमाग में हर वक्त मेरा जेंडर नहीं रहता...एक विचार ज्यादा अहम है।

स्वास्थ्य

## शुगर को जड़ से खत्म करने में काम आते हैं

### यह आसान उपाय

ठंड के मौसम में अक्सर लोग चटनी बनाकर उसका सेवन करना पसंद करते हैं। तो ज्यों ना आप ऐसी चटनी बनाएं जो शुगर को भी जड़ से खत्म कर दे। इसके लिए आप पुदीने की पत्तियां लेकर उसमें अदरक का टुकड़ा, लहसुन और खट्टा अनारदाना मिक्स करके पीसें और चटनी बनाएं।

कु. शोभा



आज के समय में शुगर जैसे एक आम बीमारी बनती जा रही है। भारत में तो छोटे बच्चों से लेकर बड़ों तक में यह समस्या देखी जा रही है। आमतौर पर शुगर की बीमारी होने पर व्यक्ति जिन्दगी भर दवाइयों का सहारा लेता है। लेकिन यह एक ऐसी स्वास्थ्य समस्या है, जिसका इलाज आप घर पर ही बेहद आसानी से कर सकते हैं। तो चलिए जानते हैं ऐसे ही कुछ उपायों के बारे में-

मखाने आएंगे काम

मखानों में कई तरह के पोषक तत्व पाए जाते हैं। यह दिल से लेकर जोड़ों के लिए फायदेमंद माना गया है। लेकिन अगर आपको शुगर की समस्या है और आप उसे जड़ से खत्म करना चाहते हैं तो आपको प्रतिदिन खाली पेट मखाने के पांच-सात दाने खाने होंगे। कुछ दिनों तक लगातार ऐसा करने से आपके

ब्लड में शुगर लेवल खुद ब खुद ठीक हो जाएगा।

करेले का सेवन

करेला स्वाद में भले ही कड़वा हो, लेकिन इससे होने वाले लाभ बड़े ही मीठे होते हैं। डायबिटीज के मरीजों को प्रतिदिन सुबह करेले का रस जरूर पीना चाहिए। करेले में

हाइपोग्लाइसेमिक बायो-केमिकल पदार्थ होता है, जो रक्त में शर्करा के उच्च स्तर का इलाज करने के लिए उपयोगी होता है।

करीपत्ता

अगर आपके लिए करेले का रस पीना संभव नहीं है तो आप दिन में दो या तीन बार कुछ करीपत्ता चबाएं। इससे भी आपकी शुगर काफी हद तक कंट्रोल हो जाएगी।

हल्दी

हल्दी में कई तरह के औषधीय गुण पाए जाते हैं। शायद इसलिए चोट लगने से लेकर कई स्वास्थ्य व सौंदर्य समस्याओं को दूर करने के लिए इसकी मदद ली जाती है। अगर आपको शुगर की बीमारी है तो आप शहद में एक चुटकी हल्दी और सूखे आंवले का पाउडर मिलाकर उसका सेवन करें। इससे आपकी स्थिति में काफी परिवर्तन आएगा। इसे भी पढ़ें- घर पर रहकर भी कर सकते हैं जिम की तरह वर्कआउट, जानिए कैसे

पुदीना

ठंड के मौसम में अक्सर लोग चटनी बनाकर उसका सेवन करना पसंद करते हैं। तो क्यों ना आप ऐसी चटनी बनाएं जो शुगर को भी जड़ से खत्म कर दें। इसके लिए आप पुदीने की पत्तियां लेकर उसमें अदरक का टुकड़ा, लहसुन और खट्टा अनारदाना मिक्स करके पीसें और चटनी बनाएं। आप अपने खाने के साथ इस चटनी का सेवन करें। यकीन मानिए, आपकी डायबिटीज की बीमारी आपसे दूर भाग जाएगी।

जामुन

जामुन इंसुलिन रेग्युलेशन में काफी फायदेमंद साबित होती है। इसलिए आप जामुन खाने के साथ-साथ उसके पत्तों को सुबह-शाम चबाएं। कुछ ही दिनों में आपको फर्क नजर आने लगेगा। मिताली जैन

### क्रांतिबीज

एक दिन मैं मंदिर गया था। पूजा हो रही थी। मूर्तियों के सामने सिर झुकाए जा रहे थे। एक वृद्ध साथ थे, बोले, -धर्म में लोगों को अब श्रद्धा नहीं रही। मंदिर में भी कम ही लोग दिखाई पड़ते हैं। मैंने कहा, -मंदिर में धर्म कहाँ है? मनुष्य भी कैसा आत्मवंचक है -अपने ही हाथों बनाई मूर्तियों को भगवान समझ स्वयं को धोखा दे लेता है! मन से रचित शास्त्रों को सत्य समझकर तृप्ति कर लेता है। मनुष्य के हाथों और मनुष्य के मन से जो भी रचित है, वह धर्म नहीं है। मंदिरों में बैठी मूर्तियां भगवान की नहीं, मनुष्य की ही हैं। और शास्त्रों में लिखा हुआ मनुष्य की अभिलाषाओं और विचारणाओं का ही प्रतिफलन है-सत्य का अंतर्दर्शन नहीं। सत्य को तो शब्द देना संभव नहीं है। सत्य की कोई मूर्ति संभव नहीं है; क्योंकि वह असीम है, अनन्त और अमूर्त है। न उसका कोई रूप है, न धारणा, न नाम। आकार देते ही वह अनुपस्थित हो जाता है। उसे पाने के लिए सब मूर्तियां और सब मूर्त धारणाएं छोड़ देनी पड़ती हैं। स्व-निर्मित कल्पनाओं के सारे जाल तोड़ देने पड़ते हैं। वह असृष्ट तब प्रकट होता है, जब मनुष्य की चेतना उसकी मन-सृष्ट कारा से मुक्त हो जाती है। वस्तुतः उसे पाने को मंदिर बनाने नहीं, विसर्जित करने होते हैं। मूर्तियां गढ़नी नहीं, विलीन करनी होती हैं। आकार के आग्रह खोने पड़ते हैं, ताकि निराकार का आगमन हो सके। चित्त से मूर्त के हटते ही वह अमूर्त प्रकट हो जाता है। वह तो था ही, केवल मूर्तियों और मूर्त में दब गया था। जैसे किसी कक्ष में सामान भर देने से रिक्त स्थान दब जाता है। सामान हटाओ और वह जहाँ था, वहीं है। ऐसा ही है, सत्य। मन को खाली करो वह है।



## कमलनाथ कैबिनेट के मंत्री ने अधिकारी के पैर छूते हुए कहा, आप जैसे लोगों के कारण ही हम लोग चुनाव हारते हैं

**भोपाल**—मध्यप्रदेश सरकार में खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर के अचानक अधिकारी के पैर छूकर हाथ जोड़ने के मामले ने सबको चौंका दिया। मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ग्वालियर शहर में आने वाले अपने विधानसभा क्षेत्र के विकास कार्यों की समीक्षा बैठक ले रहे थे। इस दौरान जब उन्होंने स्वर्ण रेखा नदी में बह रहे सीवर की सफाई और बदनापुरा में भूमिपूजन पर सवाल उठाए तो अधिकारियों के जवाब सुन वे परेशान हो गए और प्रोजेक्ट प्रभारी शिशिर श्रीवास्तव के पैर ही छू लिए और हाथ जोड़कर कहा कि आप जैसे लोगों के कारण ही हम लोग चुनाव हारते हैं।

कमलनाथ कैबिनेट में मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर सिंधिया गुट के नेता हैं। पिछले दिनों उन्होंने सार्वजनिक रूप से ज्योतिरादित्य सिंधिया के पैर छूकर मीडिया की खूब सुर्खिया बटोरी थी। वही साफ सफाई को लेकर वह हमेशा ही समाचार पत्रों में छपते रहते हैं। वह कभी नाले में उतरकर फावड़े से सफाई करते नज़र आते हैं तो कभी



**कमलनाथ कैबिनेट में मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर सिंधिया गुट के नेता हैं। पिछले दिनों उन्होंने सार्वजनिक रूप से ज्योतिरादित्य सिंधिया के पैर छूकर मीडिया की खूब सुर्खिया बटोरी थी। वही साफ सफाई को लेकर वह हमेशा ही समाचार पत्रों में छपते रहते हैं।**

सरकारी कार्यालयों के टॉयलेट साफ करने लगते हैं। लेकिन इस स्वच्छता के लिए वह कभी एफआईआर तो कभी सस्पेंड या ट्रांसफर करने की हिदायत तक देते देखे जा चुके हैं।

जब अफसरों पर इसका भी असर नहीं हुआ तो कुछ दिन पहले मंत्री खुद कमर से ऊपर तक भरे नाले में उतरकर फावड़े से सफाई करने लगे। लेकिन समीक्षा बैठक के दौरान तो

हद ही हो गई। जब अफसर के चलताऊ जवाब से खिन्न हुए मंत्री जी ने भरी मीटिंग में उठकर अफसर के पैर छू लिए। भरी बैठक में यह नजारा देख अधिकारी सख्ते में आ गए।

सूत्रों की माने तो मंत्री ने अपनी विधानसभा के विकास कार्यों की समीक्षा बैठक में स्वर्ण रेखा नदी के प्रोजेक्ट अधिकारी शिशिर श्रीवास्तव से पूछा कि बदनापुरा में सीवर लाइन का उन्होंने भूमिपूजन किया। छह माह बाद भी वहां काम चालू नहीं हो सका है। जिस पर प्रोजेक्ट अधिकारी शिशिर श्रीवास्तव ने जल्द काम शुरू कराने की बात कही, इस पर मंत्री नाराज हुए। फिर उन्होंने पूछा कि स्वर्ण रेखा नदी में 6 माह से सीवर बह रहा है। पिछले माह 7 साल का रचित श्रीवास्तव नामक मासूम उसमें डूबकर मर गया। लेकिन आज तक सीवर बहना बंद नहीं हुआ। इस पर श्रीवास्तव ने जवाब दिया कि हर दिन 60 आदमी चोक सीवर लाइन की सफाई कर रहे हैं।

## एनीमिया की कमी को दूर करने के लिए नई दवा का परीक्षण कर रही सरकार

**नई दिल्ली**—सरकार लोगों विशेषकर गर्भवती महिलाओं में एनीमिया (हीमोग्लोबिन) की कमी को दूर करने के लिए नयी दवा का परीक्षण कर रही है और इस दवा के सकारात्मक नतीजे आये हैं। इस दवा के बाजार में आने से एनीमिया पर काबू पाया जा सकेगा क्योंकि आयरन की गोलियां देने से एनीमिया की समस्या को अब तक दूर नहीं किया जा सका है। अखिल भारतीय आयरनविज्ञान संस्थान के सामुदायिक मेडिसिन विभाग के प्रोपेसर डॉ पुनीत मिश्र ने पत्रकारों को बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2018 में एनीमिया मुक्त भारत करने का अभियान शुरू किया और यह लक्ष्य रखा

गया है कि हर साल इसके तीन प्रतिशत मरीजों को कम किया जाएगा। उन्होंने बताया कि एनीमिया के मरीजों को अब तक आयरन की गोली दी जाती रही है लेकिन इतने सालों में यह देख गया कि स्त्रियों में हीमोग्लोबिन का औसत स्तर बढ़ नहीं रहा है। इसलिए सरकार ने अब नई दवा का परीक्षण शुरू किया है। इसके लिए अखिल भारतीय आयरनविज्ञान संस्थान के बल्लभ गढ़ संस्थान में अब तक 200 से अधिक महिलाओं पर परीक्षण किया गया है। इस इंजेक्शन को ड्रिप में लगाकर दिया गया तो इसके सकारात्मक नतीजे आये हैं।

सरकार से इसे लांच करने की सिफारिश की

गई है उसके बाद ही उसे बाजार में लांच किया जाएगा और डॉक्टर मरीजों के लिए यह दवा लिख सवेंगे तथा मरीज इसका फायदा उठा पाएंगे।

उन्होंने कहा कि देश में 50 प्रतिशत से अधिक महिलाएं एनिमिक हैं और इस का असर उनकी प्रसूति पर भी पड़ता है और शिशु भी कमजोर हो जाते हैं। इसलिए इसे दूर करने के लिए नए ड्रग की बेहद जरूरत है क्योंकि एनिमिक व्यक्ति कई रोगों का भी शिकार हो जाता है। उन्होंने बताया कि शनिवार से शुरू हुई पब्लिक हेल्थ कॉन्ग्रेस में भी एनीमिया मुक्त भारत पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। कॉन्ग्रेस में सामुदायिक मेडिसिन विभाग के अध्यक्ष डॉ शशिकांत इस विषय पर विशेष व्याख्यान देंगे और एनीमिया मुक्त भारत के लिए सरकार द्वारा उठाये गए कदमों की जानकारी देंगे।

## छत्तीसगढ़ में आयकर विभाग के छापे के विरोध में कांग्रेस का केंद्र सरकार के खिलाफ प्रदर्शन

**रायपुर**—छत्तीसगढ़ में राज्य सरकार के अधिकारियों और अन्य लोगों के यहां आयकर विभाग के छापे के विरोध में सत्ताधारी कांग्रेस पार्टी ने शनिवार को राजधानी रायपुर में प्रदर्शन किया और केंद्र पर राज्य सरकार को अस्थिर करने की कोशिश करने का आरोप लगाया।

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष मोहन मरकाम के नेतृत्व में कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं ने सिविल लाइंस इलाके में स्थित आयकर विभाग के कार्यालय का घेराव करने की कोशिश की लेकिन इससे पहले ही पुलिस ने उन्हें रोक लिया। मरकाम ने संवाददाताओं से कहा, “हमारी पार्टी ने छत्तीसगढ़ में 15 वर्ष भाजपा सरकार के कुशासन के खिलाफ लड़ाई लड़ी और अब हम केंद्र में (प्रधानमंत्री नरेंद्र) मोदी सरकार के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार हैं।” उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है

और राज्य में मजबूत कांग्रेस सरकार को बदनाम करने की साजिश की जा रही है। मरकाम ने कहा कि राज्य सरकार ने राज्य में पिछले भाजपा शासन के कुकर्मों को उजागर किया है। इसलिए हताशा में केंद्र ने भय और आतंक का माहौल बनाने के लिए गलत इरादे के साथ छापा मारा है।

इससे पहले कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं ने गांधी मैदान में धरना दिया और आयकर विभाग के दफ्तर की ओर रवाना हुए। प्रदर्शन के दौरान मरकाम ने राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद के नाम एक ज्ञापन जिला प्रशासन को सौंपा। ज्ञापन में, कांग्रेस ने राष्ट्रपति से इस मामले में हस्तक्षेप करने और केंद्र सरकार को राज्य सरकार के खिलाफ केंद्रीय एजेंसियों के दुरुपयोग को रोकने का निर्देश देने की मांग की है।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल नियमित विमान से अचानक रायपुर से दिल्ली के लिए रवाना

हुए और देर शाम दिल्ली नहीं पहुंचकर जयपुर होते हुए वापस लौट आए। दिल्ली जाने से पहले स्वामी विवेकानंद विमानतल में संवाददाताओं से बातचीत के दौरान बघेल ने कहा कि पिछले तीन दिनों से छापेमारी चल रही है, इसके बारे में राज्य सरकार को कोई जानकारी नहीं दी गई है।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की जानकारी के बिना आयकर विभाग पिछले तीन दिनों से राज्य में छापेमारी कर रहा है। केंद्रीय बल जगदलपुर (बस्तर) से रायपुर की ओर लगातार आना जाना कर रहा है। अगर कुछ भी होता है तब कौन जिम्मेदार होगा। कानून व्यवस्था की स्थिति का ध्यान रखना राज्य सरकार की जिम्मेदारी है। यह नक्सल प्रभावित राज्य है और उन्हें इसकी संवेदनशीलता को समझना चाहिए।

## स्वामी का सनसनीखेज खुलासा, ताहिर हुसैन के आतंकी कनेक्शन की जांच कर रहे थे अंकित शर्मा



**नई दिल्ली**—दिल्ली में हुई हिंसा में मरने वालों की संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही है। अब तक 41 लोगों की मौत हो चुकी है, जिसमें एक हेड कांस्टेबल रतनलाल और एक आईबी ऑफिसर अंकित शर्मा भी शामिल हैं। आम आदमी पार्टी से निलंबित पार्षद ताहिर हुसैन पर हिंसा फैलाने का आरोप है और केस दर्ज होने के बाद भी ताहिर फरार है। आईबी के जिस कर्मचारी अंकित शर्मा की डेड बॉडी बरामद हुई थी, उनके परिजनों ने ताहिर हुसैन पर हत्या का आरोप लगाया है। लेकिन सारे मामले को सनसनीखेज खुलासे करने वाले बीजेपी के दिग्गज नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने नई दिशा देने की कोशिश की है। सुब्रमण्यम स्वामी ने आशंका जताया कि अंकित की हत्या आप के सस्पेंड पार्षद के इशारे पर कि गई क्योंकि वो आतंकियों के हुसैन से कनेक्शन के तार तलाश रहे थे।

स्वामी ने ट्वीट करते हुए लिखा कि ‘सरकार को यह साफ करने की जरूरत है कि आईबी अधिकारी अंकित शर्मा की हत्या ताहिर हुसैन के इशारों पर तो नहीं की गई क्योंकि वह (शर्मा) बांग्लादेशी आतंकियों के साथ ताहिर हुसैन के संबंधों के तार ढूँढ रहे थे। अगर ये सच है तो यह एक बहुत गंभीर मामला है।’ बता दें कि उत्तर पूर्वी दिल्ली में हुई हिंसा के दौरान अंकित शर्मा की बेरहमी से हत्या कर दी गई थी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के मुताबिक अंकित के शरीर पर चाकूओं से 400 से अधिक बार वार किया गया था। अंकित के परिजनों ने हत्या का आरोप निगम पार्षद ताहिर हुसैन लगा था जिसके बाद ताहिर हुसैन को आम आदमी पार्टी ने सस्पेंड कर दिया था।

## हाई कोर्ट का फैसला, पिता की जगह बेटी को दो अनुकम्पा नियुक्ति

**बिलासपुर**—छत्तीसगढ़ के बिलासपुर हाई कोर्ट ने अनुकम्पा नियुक्ति को लेकर बड़ा फैसला दिया है। बिलासपुर हाई कोर्ट में अनुकंपा नियुक्ति के मामले के दयार बहन की याचिका पर सुनवाई हुई। याचिकाकर्ता बहन के दो भाई शासकीय सेवा में होने के बाद भी कोर्ट ने उसे अनुकम्पा नियुक्ति का पात्र माना है। क्योंकि वह अपने माता पिता के साथ ही रहते हुए उन पर ही आश्रित थी। इसको आधार कर ही बिलासपुर हाई कोर्ट ने अपना फैसला दिया है। प्रकरण के मुताबिक बीटीआई रोड वार्ड 29 महासमुंद निवासी जयलाल प्रधान भूमि संरक्षण अधिकारी दफ्तर में सर्वेयर के पद पर जिला गरियाबंद में पदस्थ थे। साल 2017 में उनका निधन हो गया। पिता की मौत के बाद पुत्री आकांक्षा द्वारा आवेदन पेश कर अनुकम्पा नियुक्ति की मांग की गई। संचालक

कृषि ने सामान्य प्रशासन विभाग के 29 अगस्त 2016 के सर्कुलर के आधार पर यह आवेदन यह कहकर निरस्त कर दिया कि इसके दो भाई सरकारी सेवक हैं। इससे परेशान याचिकाकर्ता ने अधिवक्ता अभिषेक पाण्डेय के जरिये याचिका पेश की। सुनवाई में अधिवक्ता ने तर्क दिया कि याचिकाकर्ता अपने माता पिता के साथ रहकर उन पर ही आश्रित थीं। दोनों भाई सरकारी सेवा में होने के बाद भी किसी तरह की मदद बहन को नहीं करते हैं। प्रकरण पर सुनवाई करते हुए जस्टिस गौतम भादुड़ी ने याचिका मंजूर करते हुए उत्तरवादि को निर्देशित किया है कि मामले में जांच के बाद यह पाया जाता है कि याचिकाकर्ता भाइयों से अलग रहते हुए जीवनयापन कर अपनी माता पर आश्रित है तो उस स्थिति में अनुकम्पा नियुक्ति प्रदान की जाए।

## हम कन्हैया के खिलाफ राजद्रोह मामले में राजनीतिक, कानूनी लड़ाई लड़ेंगे-भाकपा

**नई दिल्ली**— भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) ने शनिवार को कहा कि वह अपने नेता कन्हैया कुमार के खिलाफ राजद्रोह मामले में कानूनी और राजनीतिक दोनों तरह से लड़ाई लड़ेगी। भाकपा ने आरोप लगाया कि राष्ट्रीय राजधानी में आम आदमी पार्टी (आप) सरकार ने राजनीतिक दबाव के आगे घुटने टेक दिए। दिल्ली सरकार ने राजद्रोह के चार साल पुराने मामले में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्र संघ (जेएनयूएसयू) के पूर्व अध्यक्ष कन्हैया कुमार और नौ अन्य लोगों पर मुकदमा चलाने के लिए दिल्ली पुलिस को शुावार को मंजूरी दे दी थी। आम आदमी पार्टी ने इस मामले में कार्यवाही अवरुद्ध करने के भाजपा के आरोपों को खारिज किया। भाकपा ने एक बयान में कहा, पार्टी का राष्ट्रीय सचिवालय, पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य एवं जेएनयूएसयू के पूर्व अध्यक्ष कन्हैया कुमार के खिलाफ राजद्रोह के आरोपों को लेकर कानूनी और राजनीतिक रूप से लड़ाई लड़ेगा। बयान में कहा गया है, पार्टी को भरोसा है कि कन्हैया कुमार बेगुनाह साबित होंगे क्योंकि ये आरोप झूठे और राजनीति से प्रेरित हैं। इसमें कहा गया है कि पार्टी का मानना है कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि अरविंद केजरीवाल सरकार ने राजनीतिक दबाव के आगे घुटने टेक दिए और कुमार के खिलाफ मुकदमा चलाने की अनुमति दे दी। बयान में कहा गया है, मुख्यमंत्री (केजरीवाल) ने शुरू में खुद कहा था कि कन्हैया के खिलाफ राजद्रोह का कोई मामला नहीं है और वीडियो से छेड़छाड़ की गई है।